आस्था के स्वर

अणुव्रत-अनुशास्ता, आचार्यश्री तुलसी की षष्टिपूर्ति पर

आस्था के स्वर

सम्पादक : डा० श्यामसिंह शशि

अणुव्रत-अनुशास्ता

आचार्यश्री तुलसी

आमुख

आगम के हिमालय से आचार्य भिक्षु ने साहित्य की गगा प्रवाहित की। जयाचार्य ने उसे विस्तार दिया और आचार्य कालूगणी ने सुदृढ किया तटबध। अणुव्रत-अनुशास्ता, आचार्यश्री तुलसी आज उसे जन-जन तक पहुचा रहे है।

अणुव्रत की यह भागीरथी इस काव्य-ग्रथ मे अपने स्वाभाविक रूप में प्रवाहित हुई। पुराने हस्ताक्षरो से लेकर एकदम नये हस्ताक्षर तक इसमे सम्मिलित हैं। आचार्यश्री तथा उनके दर्शन के प्रति कविगण ने जो उद्गार व्यक्त किये हैं उससे उनकी लेखिनी पवित्र हुई है। सभी कविताओ मे आस्था के स्वर मुखरित हो रहे हैं।

सर्वश्री बच्चन, सोहनलाल द्विवेदी, प्रभाकर माचवे, गोपाल प्रसाद व्यास आदि जैसे बहुत से प्रतिष्ठित कवियो के साथ-साथ मुनि श्री नथमल जी, मुनि श्री श्रमण सागर जी तथा मुनि श्री विनय कुमार 'आलोक' की श्रेष्ठ रचनाओ से ग्रथ की उपयोगिता और भी बढ गयी है।

अनुभवी सम्पादक डा० श्यामसिंह शशि ने जिस कुशलता के साथ सुन्दर ढग से कविताओ का चयन, सकलन तथा सम्पादन किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

—डा० नगेन्द्र

सम्पादकीय

आशीर्वाद से धन्यवाद तक

नौ अक्टूबर की अविस्मरणीय सध्या।

मैं अपने कतिपय पत्रकार तथा लेखक-मित्रो के साथ अणुव्रत विहार पहुंचा।

अणुव्रत-अनुशास्ता, आचार्यश्री तुलसी के प्रथम बार दर्शन किए।

उनके तेजोमय व्यक्तित्व के चुम्बकीय प्रभाव ने अभिभूत कर दिया।

उस दिन हिन्दी तथा राजनीति शास्त्र के जानेमाने विद्वान एव पत्रकार, मित्रवर डा० वेदप्रताप वैदिक ने अणुव्रत लिया।

'नन्दन' के सम्पादक तथा लब्धप्रतिष्ठित युवालेखक जयप्रकाश भारती ने आचार्यप्रवर से अनेक प्रश्न किए।

राजधानी के युवा पत्रकार सुरेन्द्र मोहन बसल ने आचार्यश्री से कई विवादास्पद विषयो पर चर्चा की।

कुछ पी टी. आई तथा यू. एन आई के सवाददाता भी इस रोचक बहस का मजा ले रहे थे।

अणुव्रतप्रवर्तक के अकाट्य तर्कों के समक्ष सभी बुद्धिजीवी नतमस्तक थे।

आध्यात्मिक मौनता के कुछ क्षण······

और तभी एक और महान्मूर्ति से परिचय। मुनिश्री विनय कुमार 'आलोक'— हिन्दी जगत के सुप्रतिष्ठित कवि। एक आकर्षक व्यक्तित्व।

मुनिश्री बोले—

'आचार्यश्री की षष्टिपूर्ति पर एक उच्चस्तरीय काव्यग्रन्थ का सम्पादन करना है। व्रत कौन लेगा ?

प्रकाशन अवधि अत्यल्प। कुछ ही दिनो का समय। भला पूरे देश के कवियो से कैसे रचनाए उपलब्ध हो ? कौन उठाए इस बीडे को ! मैंने देखा कि मुनिश्री की दृष्टि मुझ पर पडी है ?

और यो इस चुनौती को स्वीकारा था मैंने उस दिन। अनेक पुरानी-नई सभी विधाओ के कवियो को पत्र लिखे। अनुस्मारक भेजे। कुछ यथासम्भव, व्यक्तिगत सम्पर्क भी। अन्तत. काफी-सारी रचनाएं उपलब्ध हो गईं।

रचनाओ मे कुछ घटबढ की गुस्ताखी करनी पडी।

कैसे कहू कि मैं उन सभी परिचित-अपरिचित मूर्धन्य कवियो का कृतज्ञ हू जिनका एक-एक रचना-सुमन इस पुष्पमाला का महकता फूल बन गया।

आचार्यश्री के लिए निर्मित यह माला क्या इस बात का प्रतीक नही कि इस घोर अनास्था के युग मे भी आस्था के स्वर मुखरित हो रहे हैं। इस सृजन मे पुराने हस्ताक्षरो से लेकर एकदम नए हस्ताक्षर तक सम्मिलित है। न कोई अकारादि क्रम और नही वरिष्टता आदि का अनुक्रम। जो कविता जब आई, मुद्रणार्थ भेजदी।

एक ओर समय का नितान्त अभाव, और दूसरी ओर अनुस्मारको के बावजूद प्रत्युत्तर मे शिथिलता या डाक की दुष्कृपा।

यह बताने की आवश्यकता नही कि सत-परम्परा ने ही मार्ग प्रशस्त किया है, कोटि-कोटि दीन दुखी तथा विपथगामी जनो का। स्वामी विवेकानन्द हो या स्वामी दयानन्द। मुस्लिम सत रज्जब हो या दादूदयाल, सर्वोदय सत आचार्य विनोबा भावे हो या अणुव्रत-अनुशास्ता, आचार्यश्री

तुलसी । आदि-आदि । सभी ने शान्ति, अहिंसा तथा सत्य द्वारा विश्व कल्याण की कामना की है ।

समूची मानवता की रक्षा रहा है—सभी का लक्ष्य ।

आचार्य 'तुलसी' और 'अणुव्रत' अब पर्याय बन गए हैं ।

उनकी षष्टिपूर्ति पर, यह काव्यग्रन्थ न केवल साहित्यमर्मज्ञ आचार्यश्री का वन्दन-अभिनन्दन मात्र है बल्कि सरस्वतीपुत्रो की कलम की पवित्रता का भी परिचायक है। आस्था के ये स्वर साहित्य की भी बहुमूल्य निधि बनेंगे, ऐसी आशा है।

आचार्यश्री का आशीर्वाद इस कठिन कार्य मे मेरा सम्बल बना, यह क्या कुछ कम था। केवल आभार के शब्द पर्याप्त नही ।

सेवाभावी मुनिश्री चम्पालाल जी, मुनिश्री नथमल जी, मुनिश्री राकेश कुमार तथा मुनिश्री विनय कुमार जी 'आलोक' का जो अनन्य स्नेह मिला वह मेरे लिए सयोग तथा सौभाग्य का विषय था। समिति के अध्यक्ष, माननीय डा० शकरदयाल शर्मा, सचार-मन्त्री, भारत सरकार, उपाध्यक्ष, श्री इन्द्र कुमार गुजराल, मन्त्री, सूचना एव प्रसारण विभाग, भारत सरकार, श्री बच्छराज जी कठौतिया, व्रजमोहन जी तथा षष्टिपूर्ति समिति के सभी अधिकारीगण इस कार्य मे मेरे साथ रहे। आभारी हू ।

श्रीमती शशिप्रभा ने प्रूफरीडिंग तथा अन्य सम्पादकीय कार्यो मे हाथ बटाया, तदर्थ धन्यवाद। आचार्यश्री तुलसी का आशीर्वाद वे पहले ही पा चुकी हैं।

इस ग्रथ के आमुख-लेखक, हिन्दी जगत् के मनीषी विद्वान, साहित्य-मर्मज्ञ डा० नगेन्द्र के प्रति साभार नमन !

अन्त मे, अपने सभी कवि-मित्रो, पत्रकारो एव जैन तथा जैनेतर समाज के सभी बन्धु-बान्धवो के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन एव अनजानी भूल-के लिए क्षमा याचना।

—श्यामसिंह शशि

अप्पणा सच्च मेसेज्जा

(सत्य को खोजो)

मैं मनुष्य हूँ---आचार्य तुलसी

[संक्षिप्त परिचय]

मझला कद, गौर वर्ण, विशाल भव्य ललाट, अन्तर्मन तक पैठने वाली तेजस्वी आखे, प्रलम्ब कान, मुस्कराता सौम्य चेहरा, सीधा-सादा श्वेत परिधान और इन सब मे से झाकता हुआ मानव-कल्याण के लिए सतत प्रयत्नशील गभीर व्यक्तित्व—यह है आचार्यश्री तुलसी का प्रथम दर्शन में होने वाला सक्षिप्त परिचय।

आपका जन्म स्थान लाडनूं—राजस्थान है। पिता का नाम झूमरमल जी और माता का नाम वदनाजी है। परिवार मे से एक भाई, एक वहन और स्वय माता भी दीक्षित हैं।

ग्यारह वर्ष की अवस्था मे आप जैन-मुनि वने। वाईस वर्ष की अवस्था मे विशाल धर्म-सघ तेरापथ का नेतृत्व आपको सौपा गया। चौंतीस वर्ष की अवस्था में राष्ट्र के गिरते हुए नैतिक और चारित्रिक स्तर को ऊचा उठाने के लिए अणुव्रत-आन्दोलन का प्रवर्तन किया। आज वे उसी उद्देश्य को लेकर हिन्दुस्तान के कोने-कोने में पदयात्रा करते हुए जन-जागरण मे जुटे हुए है।

तेरापथ के अष्टम आचार्य पूज्य कालूगणि के पास दीक्षा लेने के पश्चात् आपने अपने आपको गभीर अध्ययन मे लगा दिया। आप एक प्रतिभा-सम्पन्न छात्र थे। ग्यारह वर्ष की स्वल्पतम अवधि मे आपने व्याकरण, कोश, तर्कशास्त्र, आगमसिद्धान्त, दर्शन तथा साहित्य आदि का मननपूर्वक अध्ययन किया। सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी और राजस्थानी भापाओ पर अधिकार कर लिया। आपकी तीव्र मेधा का परिचय इस एक छोटे-से उदाहरण से ही प्राप्त किया जा सकता है कि इस स्वल्प अवधि मे आपने लगभग वीस हजार पद्य कण्ठस्थ कर लिए और आज भी अधिकाश पद्य आपकी स्मृति से ओझल नही हैं। आपकी विलक्षण प्रतिभा ने उस प्राचीन युग के इतिहास की एक वार पुनरावृत्ति कर दी,

जिसमे वेद, त्रिपिटक और आगम-साहित्य कण्ठ-परम्परा के आधार पर शताब्दियो तक स्मृति मे अंकित रहते थे।

गभीर अध्ययन की तरह बचपन से ही अध्यापन कार्य भी आपका प्रिय विषय रहा है। आरम्भिक वर्षो मे आवश्यक अध्ययन के बाद ही पूज्य कालूगणि के अनेक विद्यार्थी साधुओ को आपके अध्यापन-सरक्षण मे सौंपा था। अपने अतिव्यस्त जीवन मे आज भी आप नव-दीक्षित विद्यार्थी साधुओ के लिए जब-तब समय निकाल लेते है। अध्यापन-कार्य मे निपुणता के कारण केवल आपकी विलक्षण प्रतिभा ही नही थी, किन्तु दूसरो को अपनाने की वृत्ति ने भी इसमे पूरा सहयोग दिया। पास मे पढने वाले साधुओ के केवल अध्ययन ही नही, जीवन-निर्माण की ओर भी आप पूरा-पूरा ध्यान देते। विद्यार्थी-साधुओ की सार-सभाल करना, उनको आचार-कुशल बनाना, कार्य-पटुता सिखाना, रहन-सहन, खान-पान का अध्ययन रखना, उनकी समस्याओ का समुचित समाधान करना, अनुशासन बनाए रखना आदि भी आपके अध्यापन-कार्य के अग थे। आपकी इसी अध्यापन-निष्ठा ने आज सघ मे अनेक साधु-साध्वियो को साधना-कुशल के साथ-साथ साहित्यकार, लेखक दार्शनिक और अनुसधाताओं के रूप मे तैयार कर दिया है।

आपकी इन अप्रतिम विशेषताओ से आकृष्ट होकर पूज्य कालूगणि ने केवल बाईस वर्ष की वय मे ही तेरापथ धर्म-सघ का गुरुतर उत्तरदायित्व आपके नन्हें कधो पर रख दिया। बाईस वर्ष की उम्र जिसमे सामान्य व्यक्ति विचारो के चौराहे पर खडे होकर अनिर्णय के चक्रव्यूह मे फसा हुआ होता है और जिस उम्र मे यौवन की उद्दाम लहरे जीवन के सागर में भयकर उथल-पुथल मचाए रहती हैं। उस अपरिपक्व वय मे इतने विशाल धर्म-सघ का उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक वहन करने मे आप जैसे विमल एव स्थिर प्रज्ञावाले ऋषि व्यक्ति ही सक्षम हो सकते है।

स्वतत्रता-प्राप्ति के साथ-साथ आपका सार्वजनिक कार्यक्षेत्र में प्रवेश हुआ। भारत की करोडो-करोडो जनता के दिल जब आजादी की खुशी से पागल हो रहे थे, हर्षोल्लास के क्षणो मे आपने 'असली आजादी अपनाओ' का नारा दिया। आपका विश्वास था कि भारत ने यद्यपि विदेशी दासता के जुए को अपने कन्धो पर से उतार फेका है, लेकिन

जब तक उसकी मानसिक दासता समाप्त नहीं होती, वह सच्ची स्वतन्त्रता का अनुभव नही कर सकता।

आपकी मान्यता है कि समस्या चाहे युद्ध की हो अथवा अकाल की, बेकारी की हो या भुखमरी की, शिक्षा की हो अथवा अनुशासन की और राजनीति की हो या अर्थनीति की—सबके मूल मे राष्ट्र का गिरता हुआ नैतिक स्तर, चारित्रिक पतन, मानवीय अखण्डता और एकता के दृष्टिकोण का अभाव ही है। जिस राष्ट्र का चरित्र-बल सुदृढ होता है, उस पर कोई भी समस्या हावी नही हो सकती। इन्ही सब कारणो से आपने अणुव्रत-आन्दोलन का प्रवर्तन किया। आन्दोलन का प्रथम अधिवेशन चादनी चौक, दिल्ली मे हुआ, जिसकी क्रातिकारी प्रतिक्रिया भारत मे ही नही, पश्चिमी देशो में भी बडे तीव्र रूप मे हुई। देश-विदेश के अनेक पत्र-पत्रिकाओ मे अणुव्रत-अनुशास्ता तथा उनके दर्शन के बारे मे समाचार प्रकाशित हुए।

अणुव्रत-सन्देश को दूर-दूर तक पहुचाने के लिए आपने स्वय अनेक लम्बी-लम्बी पद-यात्राए की। एक जैन-मुनि होने के कारण पद-यात्रा आपका जीवन व्रत है। किन्तु भारत के सुदूर अचलो तक होने वाले पैदल-परिभ्रमण का श्रेय अणुव्रत को ही है। अणुव्रत-भारत के प्रचार-प्रसार के लिए न केवल आप स्वय हिमालय से कन्याकुमारी तक पदयात्रा से जन-जन तक पहुचे, किन्तु अपने ६५० साधु-साध्वियो के विशाल सघ को भारत के हर प्रात, नगर और गाव-गाव मे नैतिक एव चारित्रिक मूल्यो के जागरण के लिए भेजा। आप अब तक लगभग चालीस हजार मील की पद-यात्रा कर चुके हैं।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद अणुव्रत-आन्दोलन से प्रारम्भ मे ही प्रभावित थे। स्वर्गीय पडित नेहरू से भी आपका मिलना अनेक बार हुआ। पडितजी का आन्दोलन से काफी लगाव था। वे हृदय से चाहते थे कि जब देश मे चारो ओर भ्रष्टाचार और स्वार्थ-पोषण की भावना बढ रही है, इस प्रकार के आन्दोलनो का व्यापक प्रचार-प्रसार होना चाहिए। इसी तरह भारत के द्वितीय एव तृतीय राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ० राधकृष्णन् तथा डॉ० जाकिर हुसन एव स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री का भी अणुव्रत-आन्दोलन के लिए गहरा अनुराग था। इन राष्ट्र-पुरुषो ने न केवल अपना

वैचारिक समर्थन ही आन्दोलन को दिया किन्तु समय-समय पर अणुव्रत की महत्वपूर्ण गोष्ठियों में सक्रिय भाग भी लिया।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के आचार्यश्री तुलसी तथा अणुव्रत की प्रवृतियों के प्रति बहुत आदर के भाव है। आचार्यश्री की पद-यात्राओं को सफल बनाने के लिए श्रीमती गांधी का समय-समय पर महत्वपूर्ण योगदान रहा है। न केवल कांग्रेस किन्तु अणुव्रत को भारत के सभी राजनैतिक दलों का पूर्ण समर्थन तथा सहयोग प्राप्त रहा है।

आपकी मान्यता है कि धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, भाषा आदि के आधार पर मानव-मानव में भेद डालना सर्वथा अनुचित है। मनुष्य सबसे पहले मनुष्य है, इसलिए मनुष्यता की दृष्टि से सब एक समान है। कोई छोटा-बडा नही, कोई ऊंच-नीच नही। जाति आदि विशेषण उसकी पहचान के लिए गढे गए है। उन्हें लेकर किसी प्रकार का विवाद उपस्थित करना राष्ट्रीय अखंडता के लिए घातक है ही, धर्म की आत्मा पर भी यह मर्मान्तक प्रहार है। आपसे अनेक बार लोग पूछते है, 'आप हिन्दू है या मुसलमान ?' आपका एक ही उत्तर होता है, 'मैं मनुष्य हू, इससे अधिक कुछ भी नही।'

—मुनि रूपचन्द्र

समर्पण

शान्ति,
अहिंसा और
सत्य के देवदूत दीन-
दुखियों के त्राता, मानवता
के संस्थापक, विश्व-कल्याण में
संलग्न, अणुव्रत - अनुशास्ता
साहित्य तथा साहित्यकार
के प्रणेता, युगप्रधान
आचार्यश्री तुलसी
को !

अनुक्रमणिका

अभिनन्दन !

वंदन !!

न मैं जैन हूं और न मैं बौद्ध, न हिन्दू न मुसलमान। मैं केवल एक मनुष्य हूं; और कुछ नहीं।

—आचार्यश्री तुलसी

दीपक जलते रहो !

⊙

बच्चन

⊙

दीपक ! जलते रहो !
तुम्हारा पाकर ज्योति. स्पर्श, हजारो बुझे दीप जल जाये।
जब तक सूरज-चाद-सितारे, चमके ग्रहगण धरती,
दामिनि दमके, और उर्मिया जल मे रहे उभरती।
तब तक तपो तपोधन ! जब तक—
तेरे तप ताप से गल-गल, हिमगिरि नही ढल जाये,
रहे गुरुत्वाकर्षण जव तक तेरा यह आकर्षण
अग्नि-पवन, जल-जलधि और जड-चेतन का सघर्षण।
तुलसी की तुलना तुलसी से
तब तक करता रहूं कि जब तक
षष्टिपूर्ति स्वर शती-पूर्ति के स्वर मे नही मिल जाये !

मोक्ष स्वयं मानव बन जाए

⊙

मुनि नथमल

⊙

धरती के आलोक आर्य ! तुम,
तुमने यह विश्वास जगाया।
धरती ऊची स्वर्ग लोक से,
स्वर्ग मात्र धरती की छाया ।।

धरती मे वह दीप जले जो,
स्वर्ग लोक के दीप्त बना दे।
धरती मे वह धार बहे जो,
स्वर्ग लोक को तृप्त बना दे।

धरती से ही स्वर्ग बसा है,
नही स्वर्ग धरती पर आये।
स्वर्गो का सर्जन करने—
रती धरती रह पाए ।।

वर्तमान भी वस्तु-सत्य, यह
मुख्य तुम्हारा सूत्र रहा है।
बहुत सत्य भगवान आज का,
कल धरती का पुत्र रहा है ।।

मानवता के भाष्यकार तुम,
तुमने यह विश्वास जगाया।
परम सत्य मानव दुनिया मे,
सत्य मात्र मानव की छाया॥

मानव से ही मोक्ष बसा है,
वही मोक्ष धरती पर आये।
मानवता का महामंत्र ले,
मोक्ष स्वयं मानव बन जाए॥

तुलसी की चर्चा यत्र-तत्र-सर्वत्र में

⊙

गोपाल प्रसाद व्यास

⊙

जन्म के वाद षष्टी मा नै मनाई आई,
लिखते विधाता लेख वडे अवधान से ।
मूड मे थी वो भी खूव, लिखा स्वर्ण अक्षरो मे,
किया पुनरावलोकन गौरव गुमान से ।
उसने लिखा था वो ही किया या और कुछ,
ऊपर उठ गये आप विधि के विधान से ।
बनके विधाता आज पुन साठ साल वाद,
लिखते हम षष्टिलेख सादर सम्मान से ।

तुलसी की तुलना मैं तुलसी से करता हू,
शक्ति त्रिदोष-नाशक, तुलसी के पथ मे ।
मातृ-स्वरूपा, सहज सौम्य, सुकोमल शान्त,
तुलसी पवित्र मानी जाती पवित्र मे ।
सारे गुण मिलते है तुलसी के तुलसी मे,
वो है जड और ये है महर्षि-सत्र मे ।
भारत की शान मानवता के गुमान आज,
तुलसी की चर्चा यत्र-तत्र-सर्वत्र मे ।

अभिनन्दन है आज तुम्हारा !

⊙

क्षेमचन्द्र 'सुमन'

⊙

अणुव्रत के अविचल सवाहक,
तुम आचार्य-प्रवर हो तुलसी ।
जीवन के इस तुमुल कलह मे,
तुमको पा भारत-मा हुलसी ॥

इस नैराश्य-निशा मे जग ने,
जो प्रकाश तुमसे है पाया ।
वह सचमुच जीवन-दाता है—
दिशि-दिशि मे यह गान-समाया ॥

सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह—
का जो व्रत तुमने है साधा ।
प्रेरित हो उस से जीवन की,
भाग गई सारी ही बाधा ॥

भ्रष्टाचार, जमाखोरी के—
दानव को तुमने है नाथा ।
तुमसे आलोकित है मुनिवर,
भारत के गौरव की गाथा ॥

‘अनेकान्त’ के अनुष्ठान से,
हम सब आनन्दित हो जावे।
ऐसा दो वरदान, कि जिससे,
‘वर्धमान’ के गुण को गावे ॥

देव! तुम्हारे ‘चर्याव्रत’ से,
भव्य भाव जनता मे जागा।
‘महावीर’ की गुण-गरिमा से,
सब कल्मष उसने है त्यागा ॥

अमर रहो तुम युगो-युगो तक,
अभिनन्दन है आज तुम्हारा।
तुमसे प्रेरित है कवि-कुल के—
मानस की मुक्ता-सी धारा ॥

दो ऐसा आशीष अनूठा,
जीवन मे जागृति को भर ले।
चलकर पुण्य तुम्हारे पथ पर,
सफल सभी जीवन को कर ले ॥

आचार्यश्री के प्रति !

⊙

प्रभाकर माचवे

⊙

नीति तर्कना, नही काव्य आधार
काव्य भावना का व्यापार
सदुपदेश अच्छे है. उनसे कब परिवर्तन ?
मानव-समाज बदला है देखकर आचरण, वर्तन
बुद्धि ज्ञान अवलब, कर्म का मूल यहा सकल्प
किंतु हो रही युग मे आस्था अल्प
देख रहा हू कितनी बढती जाती हिंसा, द्वेष
कहा जा रहा अपना देश ?
अपरिग्रह का राग जपें जो वे ही करते सचय
नीतिनाम मुख से जीवन मे अनय-विजय
अत मुझे विश्वास नही अब शब्दो के अपव्यय मे
मुझे नही निष्ठा अब केवल कागज-मसि अपचय मे
यहा एक तोला कथनी-करनी का अभेद वाछित
व्यर्थ यहा मन-भर उपदेशो के ढेरो का सचित
क्या इतनी अनीति बढती है, समाघात है जेता
कहा खो गया नेता ?

अणुव्रत का आन्दोलन अच्छा
मुनिजन व्रत भी सच्चा
पर जिस मिट्टी से ये भवन बनाने बैठे
वे मानव ही अपने 'अह' जाल मे ऐंठे
वही मूलधन कच्चा
आशा करे कि ऐसी ही बूंदो से भरता जाये सागर
इसी भावना से अपनी भी अश्रु-बूंद अर्पित हैं
पूरित हो करुणा की गागर !

तुलसी-अष्टक

⊙

'निर्भय हाथरसी'

⊙

सजग-नयन, सुकर्ण, मृदु-मुस्कान, गुरू-गम्भीर-वाणी ।
गौर-वर्ण, विशाल-भव्य-ललाट, सात्विक-सरल-प्राणी ।।
राम-नाम-ललाम लेकर कर गये जो कार्य 'तुलसी' ।
कर रहे है अब वही अविराम श्री 'आचार्य-तुलसी' ।।

बीज राजस्थान के, वर वृक्ष हिन्दुस्तान के हैं ।
एक-एक अनेक होकर आज पूर्ण जहान के है ।।
जैन-मुनि-आचार्य हैं, पर सर्व धर्म सुज्ञान के हैं ।
जाति-धर्म-विमुक्त-पथ, कल्याण हर इन्सान के है ।।

वर्ष 'ग्यारह' के हुए तो 'जैन-मुनि' सम्मान पाये ।
वर्ष 'बाइस' के हुए 'आचार्य-पद-स्थान' पाये ।।
वर्ष 'तेतिस' बाद 'अणुव्रत-आन्दोलन' चल पडा है ।
एक द्विगुण, त्रिगुण गुणित हो विश्व के सम्मुख खडा है ।।

राष्ट्रहितकारी समस्या, शुद्ध मन से भाँप ली है ।
दो पदो से ही हजारो मील धरती नाप ली है ।।
देश हो कि विदेश हो, अणुव्रत प्रसारित हो रहा है ।
आत्म चिन्तन हर जगह निस्वार्थ—अकुर बो रहा है ।।

सर्व-धर्म-समन्वयी, भ्रातृत्व का विश्वास लेकर ।
प्रेम, जग-बन्धुत्व, नैतिक-बल, चरित्र विकास लेकर ॥
साधु-साध्वी-सघ-सहित-सुज्ञान निर्भर बह रहा है ।
'सयमः खलु जीवनम्' मृदु-घोष कण-कण कह रहा है ॥

राष्ट्रपति या सहज-साधारण सभी समकक्ष जाने ।
और जग-कल्याण-हित, नैतिक-सुधार-सुलक्ष माने ॥
धर्म जीवन मे रहे तो आप भी सब धर्म के है ।
किन्तु द्रष्टा सुदृढ सृष्टा एक मानव धर्म के है ॥

एक 'तुलसी' थे कि जिनके राम बन-बन में फिरे थे ।
क्योकि रावण-राज्य मे उस राम पर सकट घिरे थे ॥
एक 'तुलसी' है कि जो अविराम बन-बन फिर रहे हैं ।
दुर्गुणो के दनुज, पद-यात्री-पदो पर गिर रहे हैं ॥

अणुव्रती के सप्त-सूत्रो मे 'समर्पण' भावना हो ।
'संगठन,' 'सचार', 'श्रम', 'सहयोग', 'सयम,' 'साधना हो ॥
आज अणुबम-त्रस्त युग का 'अणुव्रतो' से त्राण होगा ।
आत्म-चिन्तन, चरित्रबल से विश्व का कल्याण होगा ॥

अणुव्रत-अनुशास्ता

⊙

सलेक चन्द 'मधुप'

⊙

राष्ट्रसन्त ! युग की गगा ! ! बरसाता अमृत-धार चला,
काटो की चुभन समेट, पुष्प का पावन-पथ बुहार चला—
ले, अणुव्रत की पतवार चला।

ऊचा मस्तक, सौम्य वदन, मुस्काता उज्जवल वेश में,
सात्विकता का अभिनन्दन, बन, उपजा भारत देश मे।

आखो मे करुणा का सागर, देखो ठाठें मार रहा,
ससृति की कल्याण-कामना, अणुव्रत के सन्देश मे।

सयम की शाश्वत-प्रतिमा, बन पूजा का शृगार चला।
काटो की चुभन समेट, पुष्प का पावन-पंथ बुहार चला॥

झुरमुट मे कोयल का कूजन, होती उपवन की वाणी,
अणुव्रत की धारा से निकली, वह जन-गण-मन की वाणी।

मानवता के लिए, भोर की, ज्योतित किरण खोज लाया,
पर्णकुटी से महलो तक, है गूंज रही तेरी वाणी।

सत्यार्पित हो आज धरा पर, बन सतयुग साकार चला।
काटों की चुभन समेट, पुष्प का पावन-पंथ बुहार चला॥

कठिन कुहासे में प्राची का, दिनमणि बनकर आया है,
दृढ कदमो से बढकर आगे, ज्योति जगाने आया है।

"युद्ध! धरा पर देश, काल औ' परिस्थिति की परवशता",
विध्वसो के ताण्डव पर, निर्माण खोजने आया है।

मानवता को भाषा देकर, करने जग उपकार चला।
काटो की चुभन समेट, पुष्प का पावन-पथ बुहार चला॥

"हिंसा भी पाती है थककर, आखिर शान्ति अहिंसा पर,
मनमयूर नर्तित वीरो के, होते सदा अहिंसा पर।
नही वैर से वैरी शात होता, यह सत्य चिरन्तन है,
तप: पूत ऋषियो की सिद्धि, अर्पित सदा अहिसा पर।"

शान्ति अहिंसा का अनुगायक, वीणा को झकार चला।
काटो की चुभन समेट, पुष्प का पावन-पथ बुहार चला॥

"अन्तर्मन की वृद्धि बिना, बाहरी समृद्धि अधूरी है,
क्षमा-दया सौहार्द-प्रेम से रहित खड्ग कब पूरी है।
जाति-रग-भाषा धन की, सीमा मे मानव तडप रहा,
नैतिकता से रहित, विश्व की सारी सिद्धि अधूरी है।"

"मनुज-धर्म ही श्रेय प्रेम है", करता हुआ गुहार चला।
"सब हो सुखी, धरा से नभ तक" ले पावन मनुहार चला॥

सादर अभिनन्दन !

○

फूल चन्द 'मानव'

⊙

धर्म मर्म पीडित
जन-जीवन मे छाया से आये,
ज्ञानोदधि से अमृत के
शुभ हेम-कलश भर लाये।

वितर रहे हो
परम् प्रवचनो के द्वारा जन-जन मे,
सन्त जनो के अवलोकन का
भाव जगा इस मन मे।

लौह-शृंखला के बन्धन-सी
होती है खल-वाणी,
नूपुर की झकार सदृश
सुख दातृ है जिनकी वाणी।

अत: एव श्रीचरणो मे
मम कर युग का बन्दन है,
धर्म मालिका के सुमेरु हे,
सादर अभिनन्दन है।

अभिनन्दन-वन्दन !

⊙

काका हाथरसी

⊙

तुलसी तुलना करूं, शब्द नहीं है पास,
जन्मे राजस्थान में, जग को मिला प्रकाश।

जग को मिला प्रकाश, जैन जन-जन हर्षाया,
लाड़ 'लाडनू' में बदनां मैया का पाया।

ग्यारह वर्षीय आयु, सभी सुख-सम्पत्ति छोड़ी,
बने जन मुनि आप, डार ममता की तोड़ी।

अणुव्रत का, पदयात्रा द्वारा किया प्रसार,
साक्षी इसकी दे रहे, मील पचास हजार।

मील पचास हजार, धन्य आचार्य हमारे,
जीओ उतने हर्ष, गगन में जितने तारे।

कण्ठ करोड़ो मुनि श्री तुलसी के गुण गायें,
देख सफलता अणुव्रत की, अणुबम शरमायें।

चिर अभिनन्दन !

⊙

ओमप्रकाश द्रोण

⊙

अमल विमल नव ज्योति विभाकर,
सार्वभौम हित द्योति दिपाकर ।
जन-जन के मन के दूषित वर,
बन्धन सकल अबन्धनमय कर ।

अणुव्रत, सत्य, अहिंसात्मक बल,
पा कर हो जन-जन-मन अविचल ।
पंकिल जल रत ज्यो नव उत्पल,
किंजलकीरत, ज्यो जग-हृत्थल ।

प्रसरित धवल--कमल--वरचन्दन,
पुलकित चपल भ्रमर दल जन-मन ।
गुंजित अमल समय जन-कानन,
'चरैवेति' रत वर जन-जीवन ।

अरुण राग लाञ्छित मम वन्दन ।
स्वीकृत कर वर, चिर अभिनन्दन ।

तुलसी आया ले
'चरैवेति' का नव सन्देश ।

⊙

कीर्तिनारायण मिश्र

⊙

फैला जब चारो ओर तिमिर का अन्ध जाल ,
अन्याय-अनय-हिसा का नित दशन कराल,
शोषण-मर्दन की पीडा से जब त्रस्त देश ,
तुलसी आया ले 'चरैवेति' का नव सन्देश ।

इसकी वाणी मे नवयुग का नूतन प्रकाश ,
सस्कृति-दर्शन का तेज अमित जीवन-विकास,
आदर्श-समुज्ज्वल शान्त-स्निग्ध-शुचि-सौम्य-रूप ,
गढता विकृतियो मे मानव-आकृति अनूप ।

यह तुम्हे न कोई नई बात कहने जाता ,
या तर्क-वितर्को मे न तुम्हे यह उलझाता,
जो भूल चुके तुम मार्ग उसे फिर अपनाओ ,
सात्विक जीवन के तत्वो से परिचय पाओ ।

सयमित बनालो आज कि अपने जीवन को ,
परिग्रह की ओर न ले जाओ अपने मन को,
सकल्प-वरण कर जीवन को पावन कर लो ,
अन्तर ज्योतित करने का व्रत धारण कर लो ।

तुम भूल चुके उस तीर्थंकर का शुभ सन्देश ,
जिसकी किरणो से ज्योतित होता था स्वदेश ,
यह आज उसी का गान सुनाने आया है ,
जागो-जागो यह तुम्हे जगाने आया है ।

तुलसी का 'अणुव्रत' जागृति का अभिनव प्रतीक ,
अध्यात्मवाद का परिपोषक, सद्धर्म-लीक ,
दिग्भ्रान्तो का वह करता है पथ-निर्देशन ,
सभ्यता-सस्कृति के तत्वो का अनुशीलन ।

यह अनाचार की आज रहा दीवार तोड ,
जागरण के लिए नीति-भीति को रहा जोड ,
अज्ञान तिमिर को चीर, ज्ञान का भर प्रकाश ,
कर रहा आज वह मानव का अन्तर्विकास ।

करता न कभी आमर्ष-कलह की एक बात ,
या धर्मभेद की इसके सम्मुख क्या बिसात ,
बस एक लक्ष्य इसका—'जीवन मगलमय हो' ,
अन्याय-अनय औ कल्मष का क्षण मे लय हो' ।

हो गये आज तुम हो अतिशय आचरण-भ्रष्ट ,
कर रहे आज तुम स्वय आत्म-बल को विनष्ट ,
अपनी आखे खोलो, यदि तुम कुछ देख सको ,
तो देखो अपने धर्मदूत की ज्योति-रेख ।

व्रत करते है कुछ लोग स्वार्थ की सिद्धि-हेतु ,
व्रत करते है कुछ लोग, बनाने स्वर्ग-सेतु ,
लेकिन यह 'अणुव्रत' कैसा जिसमे नही स्वार्थ ,
निष्काम कर्म यह है नैतिकता प्रचारार्थ ।

शत बार नमस्कार !

⊙

विद्यावती मिश्र

⊙

करता है आज युग तुम्हे शत बार नमस्कार !
शत बार नमस्कार !!

भूले हुए पथिक को तुमने राह दिखाई,
फिर ध्येय-प्राप्ति की पुनीत चाह जगाई,
ऐसा लगा कि लक्ष्य धाम ही रहा पुकार !
शत बार नमस्कार !!

तुमने न बहुत ही बडे आदर्श सजाये,
पारस से छूके लौह भी है स्वर्ण बनाये,
भय-शोक-ग्रस्त विश्व को तुमने लिया उबार !
शत बार नमस्कार !!

चाहे जो आये इसमे कोई रोक नही है,
ऐसा सुरम्य अन्य कोई लोक नही है,
तम-तोम कहा ज्योति राशि का हुआ प्रसार !
शत बार नमस्कार !!

आचार्यश्री की सेवा में ।

○

मैथिलीशरण गुप्त

○

तनिक से तुलसी-दल का योग ,
हो गया मेरा भोजन भोग !

तुम्हारी वाणी का अणु-दान,
लोक के लिए सुरत्न समान ।

(स्वल्प भी सद्धर्मानुष्ठान
महा भय से करता है त्राण ।)

धन्य धरती के पूत-सपूत ,
दिपो चिरदिन दिव के-से दूत !

आचार्यश्री के मार्ग-दर्शन में...

⊙

ओम प्रकाश गुप्त

⊙

मित्र,
पुरानी गलतियो को
अब मत दोहराओ,
भविष्य के ख्याली सपनो में
मत खोओ,
कुछ करना है तो
सोतो को जगाओ,
उन्हे अणुव्रत की
राह पर लाओ
दुनिया के जग लगे दिलो से
क्रोध
भय
सत्रास
आक्रोश
द्वेष जैसे
विकारो को मिटाओ
नई रोशनी को बिछाओ

आचार्यश्री के मार्ग-दर्शन मे सद्भावना,
बन्धुत्व
और प्रेम के पाठ को
विश्व के कोने-कोने मे
फैलाओ
जन-जीवन मे
शान्ति की
सुरसरी सरसाओ !

जाग्रत भारत का अभिनन्दन !

○

नरेन्द्र शर्मा

⊙

अणुविस्फोटो के इस युग मे अणुव्रत ही सबल मानव का,
व्रत-निष्ठा के बिना विफल है अनियन्त्रित भुजबल मानव का।

सघबद्ध स्वार्थो के तम मे अणुव्रत ही प्रत्यूष-किरण-कण,
महाज्योति उतरेगी भू-पर कभी अणुव्रती के ही कारण।

सदा सुभग लघु-लघु सुन्दर की महिमा से ही मडित है जग,
नापेगे कल दिग-दिगन्त भी अणुव्रत के कोमल वामनपग।

अणु की लघिमा शक्ति करेगी देशातर का सहज सचरण,
भूमिकिरण के किरण-वाण से होगा ऊर्ध्व बिन्दु का वेधन।

द्यावा की विराट शोभा ही अणुव्रत की दूर्वा है भू-पर,
दूर्वा का अतिशय लघु तृण ही मुक्ति-नीड मे सबसे ऊपर।

अणुव्रत के आचार्य प्रवर, जो शील विनय सयम के दानी,
व्यक्ति-व्यक्ति का शुभ्र आचरण बन जाती है जिनकी वाणी।

अणुव्रत के महिमा-गायन मे है उन श्री तुलसी का वदन,
अणुव्रत के अभिनन्दन मे है जाग्रत भारत का अभिनन्दन।

युग को दी नई दिशा !

⊙

बाबूराम पालीवाल

⊙

मुनियो के आचार्य, वीर के अनुगत, व्रती विरागी ।
मानवता की मूर्ति किन्तु अपने मे रहकर त्यागी ।।

हे अपरिग्रही ! कराते ग्रहण सभी को सद्गुण ।
अणुव्रत के प्रकाश से ज्योतित करते हो तुम जन-मन ।।

'अणु मे है ब्रह्माण्ड' तत्वज्ञाताओ की यह वाणी ।
सदाचार की भाव-भूमि पर तुमने ही पहचानी ।।

इसीलिये अणुव्रत की भर कर सतत् प्रेरणा मन मे ।
नैतिकता की प्राण प्रतिष्ठा करते हो जन-जन मे ।।

साठ वर्ष के युवा तपस्वी, ज्ञानी युग-निर्माता ।
युग को नई दिशा देकर ही बने मनुज के भ्राता ।।

हे तुलसी आचार्य, तुम्हारा करता कवि अभिनन्दन ।
ग्रहण करो ये भाव-सुमन-अक्षत, रोली औ चन्दन ।।

अभिनन्दन गीत !

⊙

श्रीमतवाला मंगल

⊙

हे ! युग सृष्टा, युग द्रष्टा, युग के नूतन पथ-प्रवर्तक
हे ! विश्व-शान्ति के अग्रदूत, हे नूतन विश्व-प्रदर्शक।

षट् शत करोड भयभीत त्रस्त
भौतिक प्रवाह मे पडे पस्त
तव अभय-पथ लखते प्रशस्त

कर रहे तुम्हारा वन्द्य, हे, लोक वन्द्य ! तव वन्दन !
तव कोटि-कोटि अभिनन्दन !

तुम अति उदार, उन्नत, विशाल, जाज्वल्यमान शुभदायक
युग के चिंतन-मथन-दर्शन के तुम प्रकाण्ड विधायक

उद्भव तुम से लख अणु-प्रकीर्ण
हो रहा रुद्ध तिमिरावतीर्ण
झर रहे पत्र सब जीर्ण-शीर्ण

बन रहा इन्द्रवन मरुवन, हे लोक-दीप ! तव वन्दन !
तव कोटि-कोटि अभिनन्दन !

भौतिक सुषुप्ति मे लीन लोक नेत्रो के तुम उन्मेषक
अध्यात्म-प्रात के नवल सूर्य, अणुव्रत के तुम अन्वेषक

तुमने उच्चारा दिव्य मन्त्र
हर व्यक्ति धरा का है स्वतन्त्र
है मैत्री-भाव सुशस्त्र-अस्त्र

है तयाज्य आज रण अर्चन, हे लोक देव तव अर्चन !
तव कोटि-कोटि अभिनन्दन !

हे अणुव्रत के आचार्य-प्रवर !

⊙

शशिप्रभा चोरला

⊙

हे अणुव्रत के आचार्य-प्रवर,
स्वीकारो मम शत्-शत् वन्दन !
इस पुन्य दिवस पर अभिनन्दन !

तुमने ज्योति दी इस देश को
जो बार-बार
अन्धकार से भर गया था
अहिंसा रो उठी थी
परिवेश क्रूर अनाचार से घिर गया
हम अपने ही घर मे
पराये होते गए
हम अपने ही आप से
छले जाते गए
तुम्हारा मन्तव्य यही है न
कि यह देश सारे ससार को
शान्ति से भर देगा
घर-घर को रोशन कर देगा
पर लगता है यह रोशनी

क्षीण से क्षीणतर होती-जाती है
मेरे देश के आकाश पर
हिंसा की कालिमा
चढती जाती है
आचार्य, आज तुम्हारी ओर
सबकी दृष्टि है
सचमुच तुम्हारे अणुव्रत की
सर्वत्र वृष्टि है
जो इस धरती को लहलहायेगी
शान्ति, सयम, सगठन आदि की
फसल उगायेगी ।

बहुविधि आगम ।

⊙

महावीरप्रसाद 'हलवाई'

⊙

वंदन

शक्ति का रूप धरो
राग का त्याग, करे चितरजन
क्षुधित, आर्त, कुछ के बहुव्यजन
प्रेम, प्यार दो, पतित उधारन !

जन-जन दुख हरो
शक्ति का रूप धरो ।

अविश्वासमय सर्व-विश्व है
अन्न-वस्त्र से हीन दीन है
धर्म-दान दो, हे मन-भावन !

दोऊ भव मुक्त करो
शक्ति का रूप धरो ।

ऐश्वर्य–समष्टि

सभी धर्मो मे समानता है
सभी मे महानता है
समानता उनमे भी
"जिन" द्वारा धर्म प्रतिपादित

"सियाराम मय सब जग जानी"
अमर गायक संत तुलसी
सत्य, अहिंसा, अणुव्रत अनुशास्ता
आचार्यश्री तुलसी ।
"जिन" के एक वरेण्य
अधिमानस ने बताया
असत्य का परिहार, दोष का शमन
सर्व-प्रीतिकर का त्याग ।
एक अबोध बालिका के त्याग की
कहानी एक अजैन की जुबानी
सुन आचार्यश्री अभिभूत हुए
वरेण्य की प्रज्ञा पर मुग्ध हुए।
संत-परंपरायें संतो ही की तरह अमर
पर नित्याचार की चिरन्तन आस्था,
शाश्वत का "वर्द्धमान" आवर्तन,
विज्ञान का अध्यात्म मे परिवर्तन,
आचार्यश्री की महती देन
युग-युग, का प्रकाश स्तंभ ।
न "केवल" आज न "केवल" कल
चैतन्य सृष्टि का चिर कोलाहल
सत्य की साकार-अनावधि
स्वरूप मे सावधि स्थिति ।

हे महाप्राण !

⊙

चन्द्रपालसिंह 'चन्द्र'

⊙

हे महामान्य !

नमन है, जन-गण-मन के मान्य !
नमन है, अणुव्रत के धन-धान्य !
नमन, सारल्य-सत्व सम्मान्य !
नमन, हे पूज्य--पूत--प्राधान्य!!

हे महाप्राण !

प्राण के धर्म, धर्म के प्राण !
त्राण के भीत, भीत के त्राण !
अघौघहेतु अमोघ खर वाण !
व्यथित मानवता के कल्याण!!

हे तप श्वास !

आपने हे शुचि तप विश्वास !
जगाया जन-जन मे विश्वास—
'बिना-विष पीने के अभ्यास
व्यर्थ है शिव बनने की आस!!

हे युग-सत्य !

मनुज यह भौतिकता का भृत्य ।
कर रहा व्यामोहित--सा नृत्य ।
प्राप्त कर पावन-पथ अनुसृत्य ,
आपसे ही होगा कृत--कृत्य ।

हे निर्दोष !

आपका यह अणुव्रत उद्घोष ,
शान्ति--सुख का है अनुपम कोष ,
हरेगा प्रमथा व्यथा--प्रदोष ,
भरेगा जन--जीवन मे तोष ।

आपका अभिनन्दन !

मुक्ति उद्गाता, अभिनन्दन !
मुक्ति-फल दाता, अभिनन्दन !!
मुक्ति के ज्ञाता, अभिनन्दन !!!
सुयुग--निर्माता, अभिनन्दन !!!!

कविता नहीं कर्म !

⊙

कु० ग्राशा शर्मा

⊙

धीरे--धीरे
सब कुछ छोड
एक दिया ले नन्हे हाथो
ग्रधकार भरे पथरीले पथ पर
तुम्हारा बढते चले जाना
सौम्य स्वप्न लगता है,
सहज सच्चाई नही ।

० ० ० ०

बरसो पहले—
थोथे ग्रादर्शों से जुडे
भटके हुए
दोराहो पर ग्रटके हुए
कितने--ही लोग
मदिर ग्रौर मस्जिद की सीमाग्रो तले
मानव की हत्या कर चुके हैं ।

० ० ० ०

बिखरती हुई सस्कृति
भटकती हुई आस्थाए
कोहरे से घिरे सब
एक दिन लौट आयेंगे,
अमन और अहिंसा की लौ लिए
किसी सुखद सुबह का साक्षी
तुम्हारा व्यक्तित्व –
कविता नही कर्म चाहता है ।

षष्टिपूर्ति की वेला पर

⊙

राजेन्द्र मिलन

⊙

सत्यता की तेजस्वी तमक
सयम की ओजस्वी दमक
और अहिंसा की अपराजिता प्रेमस्वी चमक
नैतिकता के अपरिमित वदन-वारो मे
प्रस्नावित चारित्रिक आभास
जीवन-उपवन मे उच्छ्‌वासित प्रेरक गधित वातास ।

अणुव्रत के आचार्य प्रवर श्री तुलसी का मानव
जीवन-आयोजन
सचमुच ही निर्देशित करता
शाति-सुख-गरिमा से पूरित भव-सम्मोहन ।

अधियारे के विशद पटल पर छहरायेगा ज्योतिर्मय
चिर महा प्रकाश
षष्टिपूर्ति की वेला पर
स्वीकारो जन-जन का अभिनन्दन
हे अणुव्रत के चिंतक-पदयात्री
मानवता के कल्याणी आकाश !

हे तुलसी...

⊙

मदन 'विरक्त'

⊙

हे तुलसी, तुमने जगती को नव-जीवन साकार दे दिया।
धन्य हुई भारत की धरती जिसको तुमने प्यार दे दिया॥

तुम सुखदायक मंगलकारक
बन कर आये युग-निर्माता।

विश्व-प्रेम बन्धुत्व भाव से
कहलाये सच्चे सुख दाता॥

तुमने तप-साधन सयम का, मानव को उपहार दे दिया।

उर-उपवन मे सत्य अहिसा
के नित तुमने सुमन खिलाये।

भूले भटके पतित जनो के
आकर तुमने कष्ट मिटाये॥

नश्वर को अविनाशी तुमने मोक्ष प्राप्ति का द्वार दे दिया॥

अमर रहेगी वह वसुन्धरा
जिसने तुम को जन्म दिया है।

कोटि-कोटि वदन उस माँ को
जिसका तुमने दूध पिया है॥

युग-युग अमर रहेगा वह क्षण जब तुमने अवतार ले लिया।
हे तुलसी, तुमने मानव को जग-जीवन का सार दे दिया॥

अहिंसा के पयम्बर !

⊙

गोपीनाथ अमन

⊙

आचार्य तुलसी की फजीलत[1] मुझसे क्या होगी बया ।
वह हैं अहिंसा के पयम्बर[2] सिद्के[3] के है तर्जुमा[4] ।।

इस दौरे पुरआशोब[5] मे जब है अधेरा हर तरफ ।
है इक मिनारा रोशनी[6] का जात उनकी बेगुमा[7] ।।

जादू है हर तहरीर[8] मे इक सेहूर[9] हर तकरीर[10] मे ।
लेती है आवाज उनकी दिल मे अहले दिल[11] के चुटकिया ।।

इनकी जुबा मे और दिल मे फासला कोई नही ।
जो दिल मे होता है अदा कर देती है उनकी जबा ।।

उनको अदावत[12] कुछ नही कोई उदू[13] भी हो तो हो ।
दिल है इक ऐसा आईना जिस पर नही है छाइया ।।

पहुंचे वह पैदल चलके भारत देश के हर गोशे[14] मे ।
उनके अमल[15] के कूअते[16] सब हैं अकीदो[17] से अया[18] ।।

ग्यारह बरस की उम्र मे साधु हुये आचार्य जी ।
इस दौरे तिफ्ली[19] मे किसी को हो शिऊर[20] इतना कहाँ ।।

---

१. महानता । २ सदेशवाहक । ३. सत्य । ४. प्रवक्ता । ५. कष्टों का युग । ६. प्रकाश स्तम्भ । ७ निस्सदेह । ८. लेखन । ९. जादू । १० भाषण । ११. दिलवाले । १२. वैमनस्य । १३ शत्रु । १४ कोने । १५ कार्य । १६. शक्ति । १७. विश्वास । १८. स्पष्ट ।

वाईस बरसो के थे वह आचार्य जी जब बन गये ।
इतनी फजीलत मिल गई उनको हुये जब नौजवा ॥

आचार्य भिक्षु ने चलाया था जो तेरा पथ को ।
क्या है ठिकाना किस कदर पेश आई थी कठिनाईया ॥

लेकिन वह बर्दाश्त की पेश आई जितनी मुश्किले ।
सहकर हजारो सख्तिया आखिर हुये वह कामरा[21] ॥

कुर्बानियो का जबसे अब तक सिलसिला चलता रहा ।
हर चश्मे बातिनकी[22] पहै वह सिलसिला अब तक अया ॥

यह जितने साधु और सतिया उनके पैरोकार[23] है ।
हर एक के जीवन मे पेश आती है अक्सर सख्तिया ॥

बर्दाश्त कर लेते है लेकिन खन्दापेशानी[24] से सब ।
है आत्मा की शक्ति उनके इस तहमुल[25] मे निहा[26] ॥

अब साठवी जो वर्षगाठ इनकी मनाई जाती है ।
हर अहले दिल का दिल है खुश, मसरूर[27] है हर नुक्ता हा[28] ॥

है यह हुआ अब तक गुजारे आपने जितने बरस ।
इतने दिनो तक और भी होते रहे वह जौ फिशा[29] ॥

बदले फिजाऐ[30] हिन्द सारी आपके उपदेश से ।
आये नजर हर सिम्त अहिसा और सचाई का समा ॥

---

१९. बाल्यकाल । २०. चेतना । २१ विजयी, सफल । २२ अन्तदृष्टि रखने वाले । २३ शिष्य, पीछे चलने वाले । २४. हसी-खुशी से । २५. सहन करने की शक्ति । २६. छिपी हुई । २७. प्रसन्न । २८. ज्ञानवान । २९ प्रकाश फैलाने वाले । ३०. वातावरण ।

महान इन्सान !

⊙

कालीचरण 'असर देहलवी'

⊙

बडे ज्ञानी बडे विद्वान है आचार्य तुलसी ।
यह कहिये एक महान् इसान है आचार्य तुलसी ॥

अमारत क्या है ? उनके फुक की अदना सी लौडी है ।
बजाहिर वे सरोसामान है आचार्य तुलसी ॥

अहिंसा के पुजारी है, मुहब्बत के भिकारी हैं ।
इक अपने नाम के इसान है आचार्य तुलसी ॥

हजारो मील तक पैदल सफर करने की हिम्मत है ।
कहूं क्या किस कदर बलवान है आचार्य तुलसी ॥

हविस जर की न सौदा है नमूदो शानो शौकत का ।
निराली शान के इसान हैं आचार्य तुलसी ॥

करेगी नाज जिनके नाम पर तारीख़ इन्सा की ।
जो सच पूछो तो वह इन्सान हैं आचार्य तुलसी ॥

हमारी किश्तीऐ उम्मीद के अब आप हाफिज है ।
बपा तूफान पर तूफान हैं आचार्य तुलसी ॥

करेगे आप ही पूरा उन्हे अपने तद्दबुर से ।
हमारे दिल मे जो अरमान है आचार्य तुलसी ॥

बबातिन इक फरिश्ता है सरासर चश्मे बीना मे ।
बज़ाहिर ऐ 'असर' इसान है आचार्य तुलसी ॥

जीवन का स्पन्दन

⊙

चन्दनमल 'चांद'

⊙

कोटि-कोटि पुत्रो की माता विकल हुई,
अवनि ने करवट ली, दुनिया डोली,
सुख-दु ख के साथी
मन के मीत
चितेरे नभ से
भीगी पलको वाली वसुधा बोली,
मुझ दुखियारी माता की फरियाद सुनो
फिर राम, कृष्ण, गौतम को
मेरे आचल मे डालो,
कोटि-कोटि मनु विलख रहे ज्वाला मे
उन पर अमृत की वर्षा कर डालो।

आकाश हुआ स्तब्ध,
वेदना घनीभूत होकर छाई
धरती की व्याकुलता से
अम्बर की आखे भर आई।

विद्युत चमक उठी, घन घहराया
पुलक उठी धरती, जन-जन का जियरा सरसाया,
रिमझिम पावस की बूदो से

वसुधा मोद मनाकर हुलसी,
गोद पूर्ण, आंचल मे खेल उठा
अम्बर का बेटा, जन-नायक तुलसी।
तुलसी रामायण का गायक है,
तुलसी जन-मन का नायक है,
तुलसी ने संघर्षो से प्यार किया,
पथ के शूलो को, फूलो का उपहार दिया।
तुलसी 'मानस' का अमर राग,
तुलसी पुष्पो का मधु पराग,
तुलसी है युग का नव विहाग,
जिसने जग को अनुराग दिया
कुछ भाव 'पुष्प'
कुछ आत्म बोध
सुख और अधिक आल्हाद दिया।
तुलसी एक विरवा है,
तुलसी एक पौधा है,
तुलसी मानवता का योद्धा है,
तुलसी एक औषधि है
जिसने मानवता को त्राण दिया
नवजीवन, नवउच्छ्वास
नई गति, नव उल्लास, नया ही प्राण दिया।
तुलसी के अक्षर तीन,
शब्द है एक
तुलसी के रूप तीन,
गुण है अनेक
तुलसी मेरे जीवन का स्पन्दन है
तुलसी को मेरा अभिनन्दन है।

तुम्हें राष्ट्रभर का प्रणाम है !

⊙

विशाल त्रिपाठी

⊙

तुम्हें राष्ट्र भर का प्रणाम है, मानवता के नेता !

मिटा कभी तूफान, चल पडी फिर से वही हवाए,
अपनी गति-विधि खो बैठी है, बड़ी-बड़ी नौकाए।
उमड़ रही जल-राशि तिमिर मे, छूट गई पतवारे,
हुई विलीन दृष्टि से नभ की वे नीली दीवारे ॥
नाविक देख रहे हैं तुमको, तुम बडवाग्नि-प्रणेता !

राह भ्रमित मानव ने अब तक, पथ की राह न पाई,
नही दूर हो सकी आज तक युग की बड़ी लडाई।
अधकार की निर्मम माया, पल-पल बढती जाती,
उधर प्रतीची के कोने मे, नई घटा घहराती ॥
तुम प्राची की प्रथम किरण हो तुम हो तिमिर-विजेता !

आज मनुजता विकल रो रही, दानवता के आगे,
मूक, भीत वाणी मे तुमसे, भीख त्राण की मागे।
अणुव्रत का ध्वज फहरायेगा, मानवता के दानी,
सदा तुम्हारा ऋणी रहेगा, विकल विश्व का प्राणी ॥
सकल्पो के सप्तसूत्र तुम हो नवयुग के नेता !

ताज है 'तुलसी'

⊙

रमेश कौशिक

⊙

सदियो पहले
जब नही कही थी क्रेने ट्रक
इन किलो, मकबरों
मन्दिर, मस्जिद, मीनारो के लिए
भला ढोया होगा
किसने पत्थर
मकरानो से

इसानो से लेकर
गधे ऊट खच्चर बैलों औ' हाथी तक
आखिर कोई तो होगा ही

किन्तु कही भी
इस दुनिया मे
बोझा ढोने वाले पशु की
या मनु की
मूर्ति उकेरी गयी नही हैं
दिलवाडा का मन्दिर
बस अपवाद रहा है

दूर खदानो से लेकर
अर्बुद पर्वत के दुर्गम शिखरो तक
जिन गजराजों ने
था मन्दिर का मरमर ढोया
तीर्थंकर के साथ प्रतिष्ठित
मूर्ति वहाँ पर है
उन सब की

एक बना था
ताजमहल
जहा
बाहु काट दी थी शिल्पी की
और इसी क्रम मे
एक और मन्दिर बन रहा है—
अणुव्रत का
जिसका ताज है 'तुलसी'
तथा सैकडो ताज और दिलवाडे
न्योछावर हैं उस पर !

सत्यालोक

○

अर्जुन 'भारती'

⊙

तुलसी,
तुम्हारा नाम अब
'अणुव्रत' का पर्याय हो गया है
तुम विश्व के लिए
नई किरण लाये हो
जिसके प्रकाश मे
धरती का
दुःखी
दलित
और त्रस्त
मानव
नये पथ का निर्माण कर रहा है
सत्य का सधान कर रहा है !

अणुव्रत-प्रवर्तक की जय !

⊙

अल्हड़ बीकानेरी

⊙

हिंसा-पथ से डरे, अहिंसा-पथ से प्यार करे,
आओ अणुव्रत-प्रवर्तक की जय-जयकार करे ।

हुआ धर्म का ह्रास, पाप धरती पर पनप रहा,
देख-देख दुर्दशा, हृदय मानव का कलप रहा ।
विश्व-युद्ध क्यो हुये, शाति का किसने चीर हरा ?
क्यो मानव के रक्त कणो से रजित हुई धरा ?

दोषी है हम स्वय भूल अपनी स्वीकार करे ।

ऐसा जीवन जिये, घृणा का जिसमे नाम न हो,
राग, द्वेष, छल कपट आदि का कोई काम न हो,

सत्य, अहिंसा और शाति का प्रबल प्रचार करे ।

अणुव्रती को नमन !

⊙

सत्यप्रकाश 'बजरंग'

⊙

जीवन एक गीत है जिसको धरती अम्बर सब गाते है।
नीड वृक्ष पर, पवन पख पर गाकर सभी हर्ष पाते है ।।

जो न अहिंसा का विश्वासी, मैं कहता वह जीवन-द्रोही ।
कहता जो दहकाओ ज्वाला, वह अशाति का प्रथम बटोही ।।

जिनका मन जडता की प्रतिमा वह मौसम को दुहराते है ।
आग लगी मधु भरे चमन मे बजा ढोल कुछ बहकाते है ।।

ओ ज्वाला से तपते प्राणी, इस जीवन को सत्य वचन दो ।
पाओगे शीतलता उर मे, निर्माणो को नये नयन दो ।।

गीत न गाती यदि यह रजनी कभी न उगती पुण्य प्रभाती ।
गीत न गाते यदि ये तारे कभी चादनी रात न आती ।।

दिनकर के प्रकाश गीतो को अगणित कमल-हृदय गाते है ।
रण-स्थल के वाद्य-यन्त्र पर योद्धा विजय-गीत गाते है ।।

गाती गीत सिन्धु की लहरें, अणुव्रती को विनत नमन मे।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान के सभी तत्व जिनके जीवन मे।।

खेद है कि इस भूमंडल पर दीखे धुंधला शांति सितारा।
राष्ट्रदेश के सब प्यारे है कोई नही विश्व का प्यारा।।

तजकर गीत विश्व समता के स्वार्थ सिद्धि गाये जाते है।
जीवन एक गीत है जिसको धरती अम्बर सब गाते हैं।।

तुलसी बस 'तुलसी' है !

⊙

सुरेन्द्र

⊙

इस महान देश का शरीर
अनेक व्याधियो से ग्रस्त है
रूढियो की गठिया से त्रस्त है
शोषण की तपेदिक
जातिवाद का कैंसर
साम्प्रादायिकता का टिटेनस
भ्रष्टाचार का सिरदर्द
अनाचार का अस्थमा
समाज के शरीर को
जर्जर कर रहा है
तब कौन बचाये इन व्याधियो से ?
अनेक प्रश्न उठते है
और स्वत: उत्तर कुछ मिलते हैं—
अणुव्रत के उद्यान मे
एक तुलसी का बिरा है
समाज की समस्त व्याधियो के
उपचारार्थ जन्मा है
तुलसी—बस 'तुलसी' है !

मेरे छंद अधूरे

⊙

बुधमल शामसुखा

⊙

नही करूगा नमन तुम्हारा अन्तर्यामी
मेरे पापो की वदनामी हो जायेगी।

वन-वन फिरने वाले मन के नाभि-मृग का
इस धरती पर कोई कही निदान नही है।
अपना तप वल व्यर्थ गवाओ मत वैरागी
उसे बचाने वाला वेद विधान नही है।
मेरी भाग्य-लिपि के अक्षर नही मिटेगे
डर लगता है तुमको हत्या लग जायेगी।

नही करूगा नमन तुम्हारा अन्तर्यामी
मेरे पापो की वदनामी हो जायेगी।

छूकर चाद मिली है मुझको केवल माटी
महाशून्य का और घना विस्तार हो गया।
हाय ! विभाकर के घर से तम लेकर आये
पथ मे लगता है मन का विज्ञान खो गया।
परस अपावन मेरे तन का वन्दन लेकर
तेरी पावनता भी दूषित हो जायेगी।

नही करूगा नमन तुम्हारा अन्तर्यामी
मेरे पापो की वदनामी हो जायेगी।

तेरे इन रीते हाथो से मेरे भिक्षु
अगर लिया वरदान साधना शरमायेगी।

मेरे छन्द अधूरे मेरे टूटे सपनो का
लेकर उपहार वासना बढ जायेगी।

कालकूट मत मागो मुझ से अमृतपायी
कही तुम्हारी कचन काया जल जायेगी।

नही करूगा नमन तुम्हारा अन्तर्यामी
मेरे पापो की बदनामी हो जायेगी।

युगप्रधान आचार्य

⊙

कन्हैयालाल सेठिया

⊙

स्नेह भरे पर तिमिर घिरे
इस बुझे-बुझे से युग-प्रदीप को
तुमने दी चिनगारी !

पन्थ हुआ आलोकित, बदली
गहन अमा पूनम मे,
किया लक्ष्य की ओर नियोजित
गति को बाध नियम मे,

परस करुण-कर सत्-शिव-सुन्दर
बनी हृदय की—सुप्त वेदना
कजरारी रतनारी।

दृष्टि हुई आश्वस्त, रश्मियाँ—
खुल खेली-त्रिभुवन मे,
मिली-आत्म अनुभूति, लहर-सी—
जागी जीवन-जन मे,

अभिमन्त्रित कर दिया मत्र वर
'पी सयम की सुधा बनेगा
प्रभु-पद का अधिकारी।'

मर्त्य स्वय ही मृत्यु जय है
जागा सपन नयन मे,
परम सत्य यह महामुक्ति की
कु जी है बन्धन मे,

लघुतम क्षण मे गू ज गगन मे
गई प्राण की पावन श्रद्धा—
तुलसी की बलिहारी !

स्थितप्रज्ञ

⊙

दिनेशनंदिनो

⊙

आठ के पहले दुनिया
अंधेरी और रात उदास थी
साठ मे आते-आते
ज्ञान के प्रकाश से
दुनिया जगमगाई
रात बदल गई
प्रभात मे,
ये
साठ वर्ष
दया, ज्ञान, सत्य, अहिंसा
शोध-प्रतिशोध
के साथ-साथ
जीये—
परिस्थितियो के तनाव
अनेकान्त मे एकान्त
विभिन्नता मे अभिन्नत्व
का सफल प्रयोग,
अब भी कोई प्रश्न

शेष है क्या ?
शान्ति, धृति, कीर्ति
निष्ठा, स्पृहा,
ज्ञातव्य अवशेष है क्या ?
किसी ने कहा कि
तुम सम्पूर्ण
तल, वितल और तलातल हो
यह सब दृष्टि-गत है—
पर यह भी एक स्थिति है
कि तुम अगोचर हो
अनहद, आनन्द हो
कैवल्य की जलधाराओ
से स्नात निसर्ग
मे उगे निर्जन
निर्विकार वाहुओ मे
सुखो को समेटे
स्वय निरानन्द हो !

यह एक सुखद सयोग
कि मैने तुम्हे देखा है।
तुम्हारे लम्बे अतीत को
विश्व के आचल पर
फैलाया है

शायद मैं भ्रमित हू
कि तुम मुझे नही जानते,
निराकार, मृत्यु, छाया
आयास की मजबूरिया
नही पहचानते

महत् के लिये
यह ज्ञान जरूरी नही,

तुम मुझ मे हो
चाहे मैं तुम्हारे भीतर
कभी आई नही हू

पथ दुर्निवार है
साझ ढल रही है—
ससृति उदास है—
यह प्यार की उदासी
मैं चुपचाप देखती हू
तुम्हारी कीर्ति का
विशद-घिराव,

तुम्हारा बाहु-बल
तुम्हारी हिमाचल-सी
स्थित-प्रज्ञ अवस्थिति,
तुम साठ के रहो
अथवा आठ के,
यह वर्ष प्रकाश के
अक्षर हैं—
चेतना के विस्तार मे,

रूपाकार के हाथ
इन्हे थाम लक-तक
यथार्थ के नक्शे
बना रहा है
पापो की तह को
चीरता हुआ
शमशीर की धार-सा

तुम्हारा आकार
अस्ति और भाति
काल और जिज्ञासा
मृत्यु और नि.शेष के
प्राणो पर
अमृत्व के बीज बोता है—
तुम सौ वर्ष जीओगे
सहस्त्र वर्ष रहोगे
क्योकि तुम अन्त नही
आदि हो
तुम खोते नही,
होते हो !

मानवता के मूर्त मसीहा

⊙

श्रमण-सागर

⊙

मत देव कहो
इनको तुम मत भगवान् कहो
ये देव नही
भगवान् नही
यदि कहना ही कुछ चाहते हो तो
इतना-सा तुम कह दो

ये हैं
मानवता के मूर्त मसीहा
बस इसीलिए शत्-शत् अभिनन्दन्
कोटि-कोटि जन श्रद्धा वन्दन्
अणुव्रत का नैतिक शख-नाद
ले धम समन्वय का निनाद
सवाद तुम्हारा सानुवाद
जन-जन तक पहुचा निर्विवाद
तज वाद-विवाद विषादाल्हाद
क्या-क्या भूलू क्या करू याद
उप कृतिया तेरी महा प्रसाद ?

बन अप्रमाद
अव्यय अबाध अतिशय अगाध
लो लाख-लाख जन-साधुवाद

अमृत घटा षष्टि-पूर्ति पुलकन्
बस इसीलिए शत्-शत् वन्दन् !

मा वदना के पावन-पराग
भूमर अल के चेतन-चिराग
बेदाग लाडणू के दिमाग
मरुधर के मेघ मल्हार राग
अनुराग अथाह् विराग त्याग
भारत भूमि के हे सुभाग
अन्तर-अरणी मे छिपी आग
जव गयी जाग
बन क्रान्तिदूत बेलाग-बाग
चल पडे चरण चिन्मय अनाग
तो तड-तडाग टूटे बन्धन
बस, इसीलिए शत्-शत् वन्दन् !

होता है देव स्वय प्रकृति,
या कलाकार-कल्पित आकृति ।
सस्कृति की कोई-सी विकृति,
कृति कहू कि ससृति की स्वीकृति ।

कोई के आदर की आवृति,
या धु धली सी कोई विस्मृति ।

प्रतिकृति के प्रति भी आदि निष्कृति,
धृति से सोचे तो पुनरावृत्ति
लेकर निवृत्ति,
कह् देता हू मत देव कहो ये तो सयति
जीवन परिमार्जन व्रती निभृति
निर्गन्ध सजोये निष्काचन
बस इसीलिए शत्-शत् वन्दन् !

अणुओं से आलोकित

⊙

हरीश भादानी

⊙

अनाकार अणुओ से
आकारो को
भीतर-बाहर
एकत्र जी लेने वालो का एक और
आकार दिया चाहने वाले अनुशामी
मनुज के वातायन मे झाक
कि सीमाए सकोचे बैठी हैं
लिप्सा की मकडी
बुनती है सुविधाए
धुआ-धुआ कर अहम्
पोछती है सारे बाहर पर
बीमार मनुज की दशा कलापो से
दुखी, आन्दोलित औ धन्वतरी ।
इन्हे तू मथन का आसव दे
बहा, व्रतो-सकल्पो की उन्चास हवाए
कि मकडी के जाले का तार-तार टूटे
खुल जाए मन का वातायन
अणुओ से सरजित आलोकित अन्तर
उजाले बाहर को—पूरे बाहर को ।

तुलसी—देदीप्यमान सूर्य

⊙

मुनि विनय कुमार 'आलोक'

⊙

आचार्यश्री तुलसी—
अनास्थाओं के अंधकार को
चीर

एक नये रथचक्र पर
आरूढ़
देदीप्यमान
सूर्य।

और, अणुव्रत—
उस तेजोमय सूर्य से—
निसृत

निखिल विश्व हेतु
सुख,
शान्ति
और सहअस्तित्व प्रभृति
का प्रकाश बिखेरता
रश्मि पथ।

कौन भगीरथ-सा नभ छाया

⊙

श्यामसिंह 'शशि'

⊙

सूरज के सग दहता-तपता
कौन भगीरथ-सा नभ छाया
प्राची के उद्यान गगन मे
एक गुलाबी गगा लाया

जब-जब धर्म मृत्यु शय्या पर
लगा तोडने अन्तिम दम को
जन्म लिया तब किसी देव ने
और भगाया छाये तम को

कुछ बोले अवतार हुआ है
कुछ कहते भगवान मिला है
कुछ ने 'पैगम्बर' सज्ञा दी
या तीर्थंकर मान लिया है

तुम उसको युग सत कहो पर
तुलसी इसी रूप मे आया
सूरज के सग दहता-तपता
कौन भगीरथ-सा नभ छाया

खाता अब विज्ञान, धर्म को
जैसे कोई कापालिक हो
या जीवित शव खाने वाला
आदिम युग का अधम असुर हो

भागम-भाग मची हर पथ पर
आपा-धापी या कोलाहल
शाति सत्य को लूट रहा है
कोई छल ले करके दल-वल

और अहिसा की देवी को
हिसा के हाथो नुचवाया
सूरज के सग दहता-तपता
कौन भगीरथ-सा नभ छाया

पहुच गया है मनुज चाद पर
धरती के घर अधकार है
है आवा का आवा दूषित
यहा-वहा सब अनाचार है

एक किरण केवल ऐसे मे
अणु के व्रत-सी निरख रही है
भौतिकता के ककण मोह मे
नव-जीवन पथ विरच रही है

इस पथ का अनुपम देवदूत
आया जग सौरभ बिखराया
सूरज के सग दहता—तपता
कौन भगीरथ-सा नभ छाया।

दर्शन

अणुव्रत समस्त मानव-समाज के लिए नैतिक विकास की एक आचार-संहिता प्रस्तुत करता है। वह अपने-आप में आत्मा की स्वतन्त्र चेतना के द्वारा व्यक्ति-निर्माण और समाज-निर्माण का एक मार्ग है। इसलिए उसका लक्ष्य भी एक व्यापक भूमिका लिए है। उसका लक्ष्य है :

(क) जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, देश और भाषा का भेदभाव न रखते हुए मनुष्य-मात्र को आत्मसंयम की ओर प्रेरित करना।

(ख) मैत्री, एकता और शान्ति की स्थापना करना।

(ग) शोषण-विहीन और स्वतन्त्र समाज की रचना करना।

अणुव्रत और युगबोध

⊙

सोहनलाल द्विवेदी

○

भारत कहा है बन्धु ?
आज मैं कराऊगा भारत का दर्शन
जहा टूट जाते देश काल के बन्धन
जिसका विराट रूप
हिमगिरि से ऊचा है,
जिसके उदर मे निहित
भव समूचा है
भारत यह नही मात्र जिसे आज देख रहे
मिट्टी की सीमा मे जिसके उल्लेख रहे
उत्तर मे जिसे हिमगिरि ने बाधा है
दक्षिण मे जिसे सागर ने साधा है
यह मात्र उसका पार्थिव तन
इसमे भी कितना है आकर्षण !
गगा और यमुना जिसका तन-मन
सवारती
कृष्णा और कावेरी
आरती उतारती
जिसका गुण गाते नही थकती है भारती !

भारत का धर्म-कर्म
भारत का सत्य-मर्म
चलता, जहाँ बोलता है
जीवन की जटिलतम ग्रथिया खोलता है ।
कैसी विडम्बना बन्धु
कैसी यह छलना है ?
भारत से बाहर आज
भारत का पलना है ।
भारत का दर्शन और भारत की आस्था
दे रही ससृति को सस्कृति व्यवस्था ।
और हम घर मे परदेसी हैं,
धर्महीन, आस्थाहीन, भटके विदेशी है
इससे भी बडा व्यग्य
होगा क्या नियति का ?
मनुज हम नही रहे
लगता सब मवेशी है ।
भौतिकता के डण्डे से हाके सभी जा रहे,
केवल अर्थतृष्णा मे भागे सभी जा रहे
कही भी टिकाव नही
कही टकराव नही
केवल भटकाव मात्र मानव की यात्रा ।
हम भी वन गये है आज
प्राणहीन लौह-यन्त्र,
चलते है सदा जो मालिक की मर्जी से
कुछ भी हमे मिलता नही
कही कोरी अर्जी से,
करते हैं घेराव, करते है हडताल,
घर मे ही लडते हैं हम,

ठोकते ही रहते ताल।
रक्तपात, हिंसा आज रग रहा
क्षण-क्षण है
नगर बने जगल यह कैसा जीवन है।
इसका भी कारण कभी सोचा बन्धु क्या है ?
आत्मबोध भूल—
युगबोध अभिशप्त हम।
मात्र अर्थबोध,
अर्थ तृषा सन्तप्त हम।।
जीवन नही धन है, जीवन आत्मदर्शन है।

तो आओ बन्धु एक बार
अपने को जाने हम
अपनी अस्मिता, अपनी सस्कृति
पहचाने हम।
एक-एक बिन्दु-बिन्दु कडी-कडी
जोडें हम
अणुव्रत स्मृतियो से अमृत
निचोड़े हम
प्रेयस नही, श्रेयस का ले विजय केतु
चलो पार करे बन्धु, दुस्तर भवसिन्धु सेतु।

अणुक्रांति

⊙

सुमित्रानन्दन पंत

○

जगत् मे उथल-पुथल हो बाह्य,
महत्, पर युग की अत सिद्धि,
शक्ति-सक्रिय भौतिक जड तत्व
बढाता जग की अतुल समृद्धि ।
ज्ञान की खुली बीथिया दीप्त,
विश्व के प्रति बदली जन दृष्टि,
मुक्त नभचारी भूचर आज
खोजता दिग् अचल मे सृष्टि ।

इधर कुछ ही दशको मे विश्व
सहसो वर्ष कर चुका पार,
और कुछ दशको मे विज्ञान
स्वर्ण युग को कर दे साकार ।

महत् रचनात्मक अणु की क्राति
बदल देगी मानव ससार,
जनो को देगा अभिनव सिद्धि
विद्युदणु का अद्भुत व्यापार!
आतरिक ही रे शाति समग्र—

अधूरे, निष्फल वाह्य प्रयास,
प्रीति आनद ज्योति के स्रोत—
हृदय अतलो मे उनका वास।
बाह्य सयोजन नि संदेह
मनुज को देगा सौख्य समृद्धि,
पूर्णता का स्वभाव सित ऊर्ध्व,
विकृति-भंगुर समतल अभिवृद्धि।

विपुल वैज्ञानिक आविष्कार
दार्शनिक सामाजिक सिद्धात
समन्वय के सास्कृतिक प्रयत्न
मिटा सकते न जगत् का ध्वात।

दौडता चेतन मे भूकप
उमड़ता अवचेतन मे ज्वार,
प्रथम बदले भीतरी मनुष्य
बाहरी बदले तब ससार।

महत् सकल्प बनाए मार्ग,
विजय पाए विकास पर क्राति,
सफल हो मानव जीवन ध्येय
सृजन अनुकूल सगठित शाति।

लौह स्थितियो के शृ खल खोल
प्रकट हो मुक्त ऊर्ध्व चैतन्य,
विगत युग कपि से ले फिर जन्म
विश्व मानव-जन भू हो धन्य।

सुलभ मानव को उन्नत मूल्य,
शक्ति साधन उपलब्ध अपार,
नही क्यो मानव जीवन स्वर्ग
धरा पर होता फिर साकार ?

सोचता कवि, निश्चय ही राग
चेतना भू पथ की अवरोध,
मुक्त हो भाव जगत् की शक्ति
मनुज को दे नव-जीवन बोध !

छोड बर्बर विध्वसक रूप
वन सके सृजनशील जो काम
मनुज को अतरैक्य मे बाध
बनाए जग को शोभा धाम !

ऊर्ध्वमुख हो प्राणो की ज्योति
रूपगत राग द्वेष से हीन,
भावना का बरसा सौन्दर्य
रचे भू जीवन स्वर्ग नवीन !

परिवेश

⊙

डा० गोपाल शर्मा

⊙

हर दिये की रोशनी
पल मे निगलता,
और भी गहरा अंधेरा
हो रहा परिवेश।
सब तरफ जैसे कि—
"चलता है।"
अब न कोई सहमता है,
चौंकता है,
या दुबारा देखने को
आख मलता है।
बात छोटी हो, बडी हो,
दे नही पाती कभी अब
तनिक भी सदेश।

इस कदर माहौल को
मजबूरियो ने डस लिया है
देखते ही देखते
काला हुआ धन-धान्य।

लार से टपके क्षणो को
हर कदम फिसलन बढी है
किन्तु भगदड है वही सामान्य ।
प्रश्न हुक पर झूलती
युग-चेतना के दिग्भ्रमो मे
उलझ कर ही रह गया
सब मान्य याकि अमान्य ।

कुछ अधिक लम्बे हुए है हाथ
सीना खीच जो मुसका रहे है
कुछ अधिक पतला हुआ है रक्त
मेहनत-कश रगो का,
झाग मु ह पर आ रहे है ।
और यह सब कुछ, कि
है तो है ।
अगर जिम्मेदार कोई
इन कठिन हालात का तो,
हम नही, वो है ।

वो ?—कही कोई नही ।
इस मोड मे पलती घुटन के
गहन सन्नाटे तले
शायद हमारी धडकनो के ही न हो.
झाई ।
कि दामन झाड़ने के
हडवडाहट मे,
न हम दिखला रहे हा,
दूर अपनी फेक परछाई
कि शायद

आसमानी सतह पर
काटे गए आकार को—
वह सिर्फ है खाली जगह।
जिस मे सही कतरन सरीखे
बैठ जाते फिट, हमी सब
व्यक्तिवाचक सर्वनामी
आप, मैं. 'औ' वह।

देखना है,
कब तलक वे नक्श खोले
सामने अपनी शनाख्तो के
न होगी पेश।
हर दिए की रोशनी
पल मे निगलता,
और भी गहरा अंधेरा
हो रहा परिवेश।

व्रत समग्र मानव-सेवा का

⊙

चन्द्र दत्त "इन्दु"

⊙

अवगाहन कर गहन तिमिर मे
ज्योति वरण करो—

शुचि, सुबुद्धि रख, कर्म समर्पित
पावन चरण धरो।

सत्य मार्ग हो लक्ष्य हमारा
अवरोधो का भ्रम न घेरे,
समता, ममता साथ लगाओ
चिंता क्या, हो घुप्प अधेरे।

निष्ठा अमृत जैसी पावन
मन मे नित्य वरो।

परहित चिन्तन मुक्त भाव से
व्रत, समग्र मानव की सेवा,
श्रम समाज मे आदर पाए
बूद पसीने की हो मेवा।

हिंसा को कर बिदा सदा को
जग की पीर हरो।

मानवता का ध्वज फहराए
वासन्ती मौसम हर्षाए,
अग, जग, दिशा, धरा, अम्बर मे
गधाती सौरभ भर जाए।

कल्याणी स्वर भर वीणा मे
अणुव्रत नाद करो।

अणु-ज्योति

⊙

रवीन्द्र मिश्र

⊙

धूमिल विगत, दीपित जगत
क्षण स्नेहरत, क्षण अग्निवत
अणु-ज्योति प्रिय तम को दिखा।

द्युतिपगे, तू तम का विभव
लय एक, अवयव नित्य नव
अपक्षरण कण-कण मे लिखा।

जल, स्नेहगघा वायु कर
लघु वर्तिका की आयु भर
कुछ सीख जग से कुछ सिखा।

मुक्ति-बोध

⊙

सत्य मोहन वर्मा

⊙

यो तो निश्चित है
यह बात
ढलता है दिन
घिरती है रात
यात्रियो के चरण डगमगाते है
और कभी वे राहो मे ही
थक बैठ जाते है
खिले हुए फूल को
माटी हरदम बुलाती है
फिर कोई अज्ञात हवा
डाली से विलगाकर उसे
धरती की बाहो मे
फेक चली जाती है।

यह सब होते हुए भी
जब कोई मोहक गन्ध वाली कली
असमय झर जाती है
तो एक प्रश्न, एक व्यथा
सूनी-सी आँखो मे
पिघले हुए सपनो का
लावा भर जाती है।

शांतिदूत

⊙

जगदीश चतुर्वेदी

⊙

दो महाद्वीप सुलग रहे है, दक्षिणी गोलार्द्ध मे उठ रही हैं लपटे
केवल सिर कटे धड
बिलखते शहर . .
ओ शाति,
हवा मे कौन-सा प्रपच रचू कि तुम्हे पा जाऊ
केवल सिरफिरो के दिए हुए वक्तव्यो पर कैसे विश्वास करू

सुलग रहा है वियतनाम
तुर्की का आधा धड
कौन से मानवीय सदेश को उच्चरित करता जा रहा है
यह लबा जुलूस ?
कोई नही है जिसे शाति का अर्थ मालूम हो
बर्ट्रेन्ड रसल या सात्र या गाधी या किसी अहिंसा दूत की आवाज जो
अपरान्ह मे कही खो जाती है

हल्ला कभी भी शब्द नही बन सकता
भीड कभी भी शाति के लिए इकट्ठी नही हो सकती
शाति के लिए इकट्ठा जन-समुदाय मौत की साक्षी है !

केवल आपा-धापी-केवल रक्तपात
कटे पिंड
युयुत्सु मानवो का सघर्ष
रक्त-पिपासुओ का तान्त्रिक गान
हवा मे कौन फेक रहा है मुट्ठिया
प्रेम के लिए कौन रिरियाता है उस ओर
कहा है सुकरात का शव .. . ?

कहा है बवी लोन . ..
मैं शाति के अन्तिम निर्णय को पदाक्रात कर
अपनी मुट्ठियो में उठा लूँ आणविक अस्त्र ?
विषैले कीडे और अणुबम ?

अच्छा हो यह प्रश्न
अपने आप ही हल हो जाए
अणुव्रत अणुबम सा असर कर जाए।

रोशनी के कबूतर

⊙

नारायण लाल परमार

⊙

जाने कौन-सी दिशा से
भूले-भटके ये
रोशनी के कबूतर
झुण्डो मे उड आए है
यहा-वहा गलियो मे
आगन, चौबारो मे
छत की मु डेरो पर
थके-मादे आ बिलमे है
इन्हे सामूहिक आदर दो
रहने के लिए घर दो ।

साथियो,
दिन मुकर्रर करो कि —
अधियारा नीलाम हो
रोशनी किसी एक की न रहे
आम हो

धन्यवाद
इन प्यारे कबूतरो को
जो भूले-भटके से आए
हमारे लिए रोशनी लाए ।

हो प्यार भरा परिवार जहां

⊙

मधुर शास्त्री

⊙

हो प्यार भरा परिवार जहा,
बोलो ऐसा ससार कहा ।

चलो तुम्हारे साथ चलू गा मैं ।

जहा न डूबे शहनाई का मीठा स्वर कोलाहल मे,
सात स्वरो के बीच न झगडा हो अनमेल अमगल मे,
जहा न जल की मछली तडपे मरुथल वाले रेत मे,
जहा न वे सब धनिया रोयें आधे जलते खेत मे,

हर दर वन्दनवार जहा,
गाए पेड मल्हार जहा ।

चलो तुम्हारे साथ चलू गा मैं ।

जहा न कोई पत्थर मारे दूध दही की गगरी मे,
जहा न कोई दुखिया दीखे ऐसी हसती नगरी मे,
जहा लिखे इतिहास न आसू असमय गीले नयनो का,
दिन न उठाये लाभ रात के टूटे क्वारे सपनो का,

यह घन न बने दीवार जहा,
औ' मन न रहे बीमार जहा ।

चलो तुम्हारे साथ चलू गा मैं ।

जहा पसीना माटी मे मिल खिलने लगे गुलाबो-सा,
जहा बने इसान न परवश पुतला किन्ही अभावो का,
जहा जवानी धोये आचल उठती हुई तरगो मे,
वचपन खीचे चित्र जहा मन चाहे रग-बिरगो मे,

हर सुन्दर का सत्कार जहा,
शिव, सत्य बने पतवार जहा।

चलो तुम्हारे साथ चलूंगा मैं।

किसी कली का शील भग क्यो करता है असभ्य भवरा,
क्यो रहता है कोमलता के द्वार कठोरो का पहरा,
जहा न कोई प्रश्न अधूरा टकराये अधिकारो से,
जहा न व्याह रचाए काटे खुशबू भरी वहारो से,

पद-लुंठित हो तलवार जहा,
औ' मुकुट बना हो प्यार जहा।

चलो तुम्हारे साथ चलूगा मै।

कोई दीप नया

○

चन्द्रसेन 'विराट'

⊙

गढ फिर कोई दीप नया तू मिट्टी मेरे देश की ।

अधी हुई दिशाए सारी यू अधियारी छा रही
किरण तोडती सास रोशनी जीने को छटपटा रही
ऐसा कुछ गत्यावरोध है आज विश्व की राह मे—
पथ भूले बनजारे जैसी पीढी चलती जा रही ।
कोई बाह पकड ऐसे मे सही दिशा का ज्ञान दे
सख्त जरूरत है दुनिया को फिर कोई दरवेश की ।

देवभूमि यह जन्म दिये हैं इसने ही अवतार को
ज्योतिस्तभ बन हरती आयी यह जग के अधियार को
मुझको है विश्वास कि धरती बाझ नही इस देश की—
फिर से कोई नया मसीहा देगी यह ससार को ।
इसकी मिट्टी उडकर बैठी सूरज के भी भाल पर—
नित उभरी आवाज यही से शाति प्रेम सदेश की ।

यद्यपि प्रलयकारी घन से घिरा हुआ आकाश है
फिर भी मानव के भविष्य से मेरा मन न निराश है
शायद इसी मोड के आगे निज अभिलाषित लक्ष्य हो—
इसी तमिस्त्रा के पीछे भी कोई नया प्रकाश है ।
जब तक मेरा देश मनुजता होना नही उदास तू—
शुभ वेला है निकट जनम की फिर कोई अवधेश की ।

हम शान्ति, अहिंसा के पूजक

⊙

श्यामलाल 'शर्मा'

⊙

इक गीत लिखूं लावा उगले, इक गीत लिखूं धूआ निकले !

वह गीत कि भागे अधियारी
वह गीत कि फूंके चिनगारी
सब एक बनें काबा-काशी
सब कुछ, पहले भारत वासी

एकता उठे सागर के सम, जो जाति-पाँति नदिया ढकले !

हर कृषक शपथ ऐसी खाए
खेतो मे हरियाली छाए
श्रमिको की बाहे फडक उठें
श्रम मे बिजली-सी चमक उठें

हम शान्ति-अहिंसा के पूजक, हर डर मे केवल प्यार पले !

समता का चहुं दिशि बिगुल बजे
हर धर्म देश के लिए सजे
जय जननी भारत माँ विशाल
तेरा सदैव हो उच्च भाल

लेखनी लिखे बस शब्द यही, हिमगिरि की शीतल छाव तले !

समवेत गीत

⊙

राजेन्द्र अनुरागी

⊙

बुद्धि को विचार का प्रकाश चाहिये !
सूर्य यही-कही आस-पास चाहिये !

कौन रग किरण कहू, बताओ तो सही
अनेक अन्त भेद, सत्य पाओ तो सही
इस तरह मनुष्य का विकास चाहिये !
सूर्य यही-कही आस-पास चाहिये !

लिच्छवी-कृपाण से अधिक समर्थ है,
शक्ति मे क्षमा न हो, महा अनर्थ है,
इस तरह समाज की तराश चाहिये
सूर्य यही-कही आस-पास चाहिये ।

कौन जमाखोर है, बताओ तो सही
परिग्रह का नर्क भुगतवाओ तो सही
समता मे ममता का वास चाहिये !
सूर्य यही-कही आस-पास चाहिये ।

बुद्धि को विचार का प्रकाश चाहिये !
इस तरह मनुष्य का विकास चाहिये !
इस तरह समाज की तराश चाहिये !
समता मे ममता का वास़ चाहिये !

सूर्य यही-कही आस-पास चाहिये ।

अणुव्रत—अणुविस्फोट-सा

⊙

गबरसिंह रावत

⊙

ध्वस और निर्माण आज यो तो दोनो है अपने हाथ
किन्तु सदा ही हमने तो है पहले दिया सृजन का साथ

वह जो मरु के भीतर हमने भीषण अणु-विस्फोट किया है
बतलाता है कुछ देशो को कैसे हमने सबक दिया है
सत्य, अहिसा, सयम के पर हम ही है व्रतधारी
इस पथ से जो गया उसी के आगे झुका हमारा माथ

रेगिस्तानो मे जल की अब धाराए हम दौडा देगे
सूखी, बजर धरती को भी हरियाली से ओढा देगे
खोद सुरगे दुर्गम को भी राहो से अब जोडेगे हम
भूखा-प्यासा आगे कोई नही रहेगा दीन-अनाथ

ऊचे-ऊचे शिखरो को भी हम सपाट बना डालेगे
गहरे नद, तालो, गड्ढो की गहराई पर भी छा लेगे
छिपी हुई वहुमूल्य सम्पदा धरती के भीतर से लेगे
मानव का कल्याण करे जो ऐसा रहा हमारा पाथ

ध्वस और निर्माण आज यो तो दोनो है अपने हाथ
किन्तु सदा ही हमने तो है पहले दिया सृजन का साथ

आस्था और आस्था

⊙

केदारनाथ कोमल

⊙

हर दुख सग इतना
दुखी होना चाहता हूँ
कि मुस्करा सकूं !

हर दर्द सग इतना
छटपटाना चाहता हू
कि नित नए गीत गा सकू ।

हर आह सग इतना
बिखर जाना चाहता हूं
कि जीवन को गुदगुदा सकू ।

हर अधेरे सग इतना
सियाह होना चाहता हूं
कि रोशनी बन जगमगा सकूं !

हर थकन सग इतना
थक जाना चाहता हूँ
कि उषा सग खिलखिला सकू !

हर पतझड सग इतना
तडपना, टूटना, बिखरना
चाहता हू
कि बसत बन लहरा सकू ।

मैं, यानी मनुष्य

⊙

जीवन प्रकाश जोशी

⊙

दिन दीखता है,
लम्बी-लम्बी, लाल-लाल टागो वाला एक शैतान,
दबोचे हुये दुनिया का पूर्वी और पश्चिमी गोलार्द्ध,
भुजाओं मे जकडे,
ध्वस्त नगरो-महानगरो के फासिल्स और सभ्यता की नगी देह
मगर इस कुदृश्य का सृष्टा और दृष्टा,
कोई शैतान तो नही है,
सिर्फ मैं हूँ
मैं यानी मनुष्य !

रात दीखती है,
बिखरे बालो, खडे कानों और गोल आँखो वाली एक डायन,
जिसके सिर पर चाद उल्टे तवे-सा रखा है,
पैरो तले मगलग्रह का खून बहता है,
जिसके वज्र दतो से दात किट-किट जूझ रहा है
लहूलुहान हिरण्यगर्भ,
मगर इस कुदृश्य का दृष्टा और सृष्टा
कोई शैतान तो नही हैं,
सिर्फ मैं हूं,
मैं यानी मनुष्य !

प्रकृति, अणु और जीवन

⊙

उमाशंकर 'सतीश'

⊙

पहाड़िया रमणीक हैं
नदिया दुग्ध धवल
हरे भरे तरुवृन्त
रग-बिरगे फूलो से
शोभित ये घाटिया
विहगो का कलकूजन
गु जित मन ।

गावो मे जीते है
सत्रस्त दलित मानव
कीचड के कीडे-सा
रेग रहा जन-जन
मानवता खोल नयन
अणु-अणु से लेकर
जीवन का नया मनन ।

मुझ में ही

⊙

इन्दु जैन

○

मोहरा नही है मेरे पास
कि मुट्ठी मे छिपा लू
जीभ तले
  दबा लू

अगारो पर चलती चलू ।
तभी तो
सामान्यो मे सामान्य ही रहू गी
हातिमताई नही हू गी ।

पहेलियो से कतराती
डूबती नही
तैरती—
सतही रहती हू
एक मात्र जीवनार्थी विष से सहमी
जड रासायनिक शर्बत पीती हू —

अकेलेपन का अहसास
बडे से बडे को तुच्छ बना
जाता है
पर
भीड में आते ही
व्यक्तित्व लहर-सा डूब जाता है ।

कीच प्राणदायी हो जाए तो
कमल हूं मैं,
नही तो सेवार और काई
दूसरे को फिसलाती फिसल जाऊ
या
ऊर्ध्वगामी सुगध की लहरी-सी उठू ?

उसी पर निर्भर है सब
उसी पर
मोहरे पर
भीतर फूटते अकुर पर
हथेली मे दबा भी नही है
जीभ मे पला भी नही है
कतरा है मेरा
मेरा कदम
जो एक-एक सीढी पर चलता
छत पर चढा है...... ..

अणु-शक्ति

⊙

पुष्पधन्वा

⊙

बूंद-बूंद से समुद्र
कण-कण से पहाड़
बीज से पेड़ छायादार
मिल-मिल कर
खिल-खिल कर बने सब ।

अणु बहुत तुच्छ है, अदृश्य है
पर, अणु विस्फोट महान् शक्ति है !

अणु-अणु संकल्प लो
नन्हा-सा व्रत लो ।
स्वयं शक्ति धारण कर
अणुराह दिखाएगा
बूंद-बूंद से समुद्र
कण-कण से पहाड़
बीज से पेड़ स्वयं
खड़ा हो जाएगा ।

आदमी बनाम आईना

⊙

विनोद शर्मा

⊙

माना कि,
तुमने लोगो को—
उनके चेहरे दिखाए
मगर, दूसरो को—
उनके बौनेपन का अहसास करा
तुम्हे क्या मिला
सच कहू
मसीहा बनने के चक्कर मे—
तुमने अपनी जिन्दगी खराब की
काश, तुम्हे मालूम होता
कि राजा भोज और गगू तेली मे
एक बुनियादी फर्क होता है
और यही बुनियादी फर्क
छिद्रान्वेषण को—
पथ-प्रदर्शन से अलग करता है
अच्छा होता, कि तुम—
अपने गिरेबा मे हाथ डालकर देखते

अगर तुम अपना चेहरा—
अपने सामने रखते
उसे पढते
और गढते
तो आज तुम एक सस्था होते ।

चेहरे पढने
और चेहरे गढने की दूरी को,
नापने की असमर्थता ने—
तुम्हे आईना बनाकर रख दिया,
और तुम जानते ही हो
कि आईना
चेहरे की कमिया
पकड तो सकता है,
सुधार नही सकता ।

स्वयं, यानी प्रश्न और उत्तर

⊙

रामकुमार 'कृषक'

⊙

वे समस्याये नही
जो दिख रही है
वह धरातल भी नही
जिस पर खडे हम
वह नही जीवन
जिसे हम जी रहे है।

समस्याये
धरातल
और जीवन-ढग
सब भौतिक हमारा
जबकि हर स्थूल का
सबध उसके सूक्ष्म से है
दृश्य के अदृश्य से है।

वृक्ष जीवन-रस जहा से
ले रहा है
देह को यह रूप
जो क्षण दे रहा है

प्रक्षालन पुन. कर
हम इसी प्रयोगशाला मे घुसे
बैठे बहुत जीवन्त होकर
क्योकि पीडित मनुजता की
ग्राख हम पर है,
हमारी ग्राख भीतर

दृष्टि भीतर से उठेगी जो
वही बाहर जियेगी
शक्ति जो ग्रन्त. सुधा से तृप्त होगी
बस वही
हर जहर बाहर का पियेगी।

आज का सूरज

⊙

भवानी प्रसाद मिश्र

⊙

इस समय मैं एक बगीचे मे बैठा हूं
मेरे आस-पास के पेड़ो पर
पछी चहक रहे हैं
और महक रहे है
पौधो पर फूल !
सूरज तक को सुख देने लग रहे हैं
ये चहकने वाले पछी
महकने वाले फूल

और सूरज
कुछ अधिक ही प्रसन्न-भाव से
आसमान पर उपर उठ रहा है।
बडी अच्छी है यह घडी
जिसमे मैं चहकने वाले पछी
और महकने वाले फूलो के साथ-साथ
सारी दुनिया के लोगो के बारे मे
गा-पा रहा हू और प्रसन्न-भाव से
आ-जा पा रहा हू

उनके दुखो के आर-पार
सोच रहा हू दुनिया के आने वाले दिन
दुनिया के आने वाले पल
दुनिया के आने वाले छिन
बहुत जल्दी इस तरह
आसमान मे ऊपर उठेगे
जिस तरह आज की इस सुबह मे
सूरज आसमान मे ऊपर उठ रहा है

चाहता हू गिनना न पडे
आने वाली पीढियो को
आने वाली घडिया
चमका सके वे
उन्हे सूरज और चाद और सितारो की तरह
बोझ न लगे उन्हे दिनो का
न दिनो को उनका
लग सके वे एक-दूसरे को
सहारो की तरह !

अणुव्रत से राष्ट्र निर्माण...!

⊙

डा० शेरजंग गर्ग

⊙

तुमने रूमाल से क्या पोछा है ?
चेहरे का पसीना या आखे !
उदास क्यो हो ?

तुम अकेले तो नही हो—
तुम्हारे साथ रोज साइकिलो के रेवड मे
दफ्तर जाने वाला डालचन्द चपरासी है,

निचले तल्ले मे
अपनी औकात से ज्यादा किराया चुकाने वाला बाबू है,
तुम्हारे साथ रोज-रोज बस की लाईन मे
धक्के खाने वाले कोहली, चन्दोला और कपाही है,

राशन मे 'कैसे भी गेहू' की प्रतीक्षा करने वाले
आस-पास के तमाम पडोसी है,

डालडा की क्यू मे आखिरी दम तक खडे होकर
खाली हाथ लौट आने वाले धैर्यवान है !

सचमुच तुम अकेले नही हो
क्योकि देश का प्रत्येक
सही सलामत ईमान वाला आदमी

तुम्हारी ही तरह जिन्दगी को
किसी-न-किसी क्यू मे गुजार रहा है

मजेदार और विडवनापूर्ण
(दोनो माथ-साथ)

स्थिति तो यह है—
कि लोगो के फरेबों, जालसाज़ियो ने उन्हे
वाणिज्य चैम्बरो, आयोगो, विश्वविद्यालयो मे
कही-न-कही सत्तारूढ वना दिया है
और तुम्हारे सौजन्य, देश-प्रेम, मासूमियत और सादगी ने
तुम्हे किंकर्तव्यविमूढ वना दिया है।

तुम्हारे पास राशन नही है
मगर तुम्हारा दिल क्या यह मानता है
कि अन्न के गोदामो मे लूट मचाकर
कुछ मिलेगा ?

तुम भीतर-ही-भीतर
ज्वाला मुखी के समान सुलग रहे हो
और समूचा भारत वद पडा है।

और फिर एक प्रश्न
दहकते अगारे-सा
राष्ट्र-निर्माण .. ..?

और उत्तर मे
अणुव्रत . .. ?
मौन साधे खड़ा है।

विकसित असंस्कृति

⊙

प्रेमानन्द चन्दोला

⊙

यूं कहने को
कुछ न कुछ सुघढता सभी चीजो मे होती है
लेकिन कुछ मे नही भी होती न !
जैसे कि बोरे मे ।
इसके स्वरूप को
सुन्दर तो शायद ही कहे कोई
जो ऊपर से नीचे
या नीचे से ऊपर एकसार
कही कोई बारीकी, आकर्षण
उभार या विभेदन नही
और जिसमे—
फूले रहने की आत्मकेन्द्री प्रवृति के साथ-साथ
चारो कोनो मे पसरकर
मनमाने ढग से येन-केन-प्रकारेण
बस, अपनी भौतिक रिक्ति को बदलने
और स्वय को भरने-पूरने की भूख होती है।
अफसोस कि,
बेजान बोरे तक ही यह चलन होता
तो कोई बात न थी
किन्तु ओ मनीषियो !

सचमुच तब क्या किया जाए ?
जब
कुछ न कर सकने वालों को
आत्मबोध हो जाए
और आए दिन यह अनुभव सालता रहे कि,
—जिस धर्मी-कर्मी महानायक की विकास-कथा को
डारविन, लामार्क आदि विज्ञानियो ने
विज्ञान की कसौटी पर आजमाया है
और जिसकी गौरव-गाथा को शताब्दियो से
हमने आदर्श ग्रथो के पन्नो मे रगा पाया है,
— उसी विकसित और सर्वोच्च प्राणी की नागरिकता
यानी - पढे-लिखे, गुणे और बने-ठने
सुघढ-सभ्य-सम्पन्न मानव की सस्कृति
आत्मिक और मानवोचित मर्यादाओ के दुर्भिक्ष मे
आज—
मात्र काला बोरा बन कर रह गई है !

अशुचि

⊙

दिविक रमेश

⊙

हा, मैंने जान लिया
हर देह मे
एक दुर्घटनाग्रस्त लाश है ।

चिथडा हुआ मास
और
रक्त-सनी हड्डिया ।

कितना वक्त बर्बाद कर दिया
खाल की ओट मे छिपी
लाश
बहलाने मे

भीतर तक उधडना
नही आता
हरेक को ।

कितना सुन्दर लगा था
ऊपर लहलहाती लहर,

बिना सीखे
कूद पडा था
और डूबने के बाद ही
कीचड,

गड्ढे
जाने क्या-क्या उभर गया था।
आंखो के आगे
एक आदमी
पीला हो चुका था

सच,
मैं तब भी जिन्दा था !

अगवानी रोशनी की

⊙

विश्वनाथ मिश्र

⊙

सूरज की एक किरण ने
झोर डाला है
जागो !

सवेरा बहुत थोडी देर के लिए होता है।

जागने वाले इस सवेरे के
बहुत समय तक रखते हैं जमाना
अपने साथ।
और वे, जो सो कर खोते है
मलते हैं हाथ।
जागो ! दौड शुरू होती है
हमारे चाहने न चाहने पर
वह पहली किरण जो दूर आसमान पर
उजाला बोती है
अगर न देख पाये तो
वे किरणें जो तुम्हें घेर लेंगी
रोशनी के बजाय
तुम्हारी आंखें चौंधिया देंगी !

आत्म-प्रवंचना

⊙

पुरुषोत्तम 'प्रतीक'

⊙

मैं . ...
अपना घर भूल गया हूं,
शायद
विपरीत चलता रहा हू
उसकी तलाश मे
बहुत सामान लाद लिया है
इस बीच सिर पर
बोझ पहन कर पाने मे असमर्थ
ढूढता हूं वाहन
सुनसान मे

मेरे कान मे
आती है आवाज
क्रमश. बढती जाती है
मेरा रुख बदल जाता है
लगा कोई आता है
घर—
मेरे मुह पर
चाटा मार कर
बह जाती है हवा—
साय-साय सररऽर...

ग्राखो मे
छोटी और छोटी होकर
पुतलियो मे लुप्त हो जाती है
जाने कहा खो जाती है
ग्राकृति

कान के सूराख सुरंग हो जाते है
तब मैं
सोचता हूँ—
सदेह जीना भी कोई जीना है !

शूल-फूल अणुव्रत अपनाए

⊙

विमला दयाल

⊙

सत्यमेव जयते, जयते, जयते ।

चाहे नभ मे घन घिर आए, चाहे गगन अधेरा छाए,
विद्युत अम्बर के आगन मे ज्योति-किरण का चौक लगाए,

किरणे लुक छिप चित्र बनाती, चिर प्रकाश जयते ।
सत्यमेव जयते, जयते, जयते ।

श्रम के दीप्तानल मे तपकर, धरती नव शृ गार सजाए,
श्रमिक के जलकण से धुलकर, उपवन रूप अनोखा पाए,

दूर अलसता बैठी रोए, कर्मक्षेत्र जयते ।
सत्यमेव जयते, जयते, जयते ।

लतिका कटक के आचल पर, मधुर-मधुर नित पुष्प सजाए,
सर्पो से चुम्बित चन्दन भी, शीतलता और गन्ध बहाए,

शूल-फूल अणुव्रत अपनाए, मानवता जयते ।
सत्यमेव जयते, जयते, जयते ।

चादर बिना बुई

⊙

जगपाल सिंह 'सरोज'

⊙

नागफनी बन गई
अभी तक
जो थी छुई-मुई
राम जाने क्या बात हुई!

लोक लाज की उडा चुनरिया
बिछुवे फोड दिये
तन-मन बन्दी करने वाले
रिश्ते तोड़ दिये
घूंघट खोले खडी द्वार पर
दुलहिन नई-नई!

बागी हो गई धूप, सूर्य को—
आंखें दिखा रही
सडको पर बैठी दोपहरी
नारे लगा रही
रसिया गाती साझ हाय
आसू मे डूब गई!

गन्धाते स्वर्णिम सपनो को
लकवा मार गया
तूफानो से जीता जो मन
खुद से हार गया
पढती ईद नमाज ओढकर
चादर बिना धुई ।

जीवन के सत्य को

⊙

लक्ष्मी त्रिपाठी

⊙

विविध सौदर्य-उपकरणो
आभूषणो से सजी
निर्वस्त्रा नारी-सी,
जगली पौधो
कैक्टसों से घिरी
निर्गन्धा कोठी-सी,
सभ्यता का स्वाग भरती
प्रगति का दावा करती
पागल यह पीढी
आवारा वजारे-सी
भटका-भर करती है !

प्रेम जिसे मिला नही
जाने क्या प्रेम भला
अदर से भूखी-सी
आकुल-सी पलती है,
कोई है वीटल तो
कोई है वीटनिक

हिप्पी बन जाने की
छलना मे पलती है
निर्वस्त्रा, निर्गन्धा, आवारा आकुल-सी
भूली-सी भटकी-सी
पागल यह पीढी
पग-पग पर मरती है।
जीवन के सत्य को
हिसा से ढकती है।

रश्मियों पर तम

⊙

रघुवीरशरण 'मित्र'

⊙

रश्मियो पर तम प्रसूनो पर धधकती आग।

जाग विप्लव जाग।
शेषशायी जाग।
त्याग निद्रा जाग।

रो रहा उत्थान हसता है पतन।
प्रेत-सा हर ओर है आत्मा अतन ॥
मर गया विश्वास जीवित है मरण।
आज इति की जय, रुके गति के चरण ॥

सभ्यता को डस रहा स्वाधीनता का नाग।
रश्मियो पर तम प्रसूनो पर धधकती आग।

जाग विप्लव जाग।
शेषशायी जाग।
त्याग निद्रा जाग।

तन मधुर, मन मे जहर क्या यह मनुज।
साधुओ के वेश मे फिरते दनुज ॥
न्याय की लाशे बिकी बाजार मे।
आदमी अन्धा हुआ अधिकार मे ॥

ओ परीक्षित ! फूल मे लिपटा हुआ है नाग।
रश्मियो पर तम प्रसूनो पर धमकती आग।

जाग विप्लव जाग।
शेषशायी जाग।
त्याग निद्रा जाग।

रक्त-रजित नभ धरा जय पर अनय।
आग उपवन मे लगी मधुकर अभय॥
भूल बैठे दीप शलभो का वहन।
शान्ति करती है प्रहारो को सहन॥

जल रहा है सत्य नेह औ' लुट रहा है बाग।
रश्मियो पर, तम प्रसूनो पर धधकती आग।

जाग विप्लव जाग।
शेषशायी जाग।
त्याग निद्रा जाग।

प्यास को अगार देते है कुए।
मित्र कोई भी नही कैस हुए॥
जिन्दगी की रेत पर दीवार है।
कुर्सियो पर हर तरफ तकरार है॥

देश के धन मे लिपट बैठे भयकर नाग।
रश्मियो पर तम प्रसूनो पर धधकती आग।

जाग विप्लव जाग।
शेषशायी जाग।
त्याग निद्रा जाग।

अजनबी संदर्भों के बीच

⊙

धनंजय सिंह

⊙

सूर्य की किरणें
अंधेरे का
बढाकर हाथ स्वागत
कर रही हैं

रोशनी
विश्वासघातिन-सी
हुई है मौन
दीवारें
चिढाने लग गई मुंह आदमी का

पेड-पौधो से
हवा की दुश्मनी है
गैल-गलियारे, सडक
बहका रहे है पाव
कैक्टस के फूल
कोटो पर सजाए
अजनबी-सा देखता सब गाव

कोई
यह नही कहता
कि आंसू पोंछ डालो
चांद को
धब्बे छिपाने की पड़ी है
न जाने
आज यह कैसी घड़ी है
चलो हम तोड़ दें एक-दूसरे का मन।

सहनशक्ति

⊙

गुणमाला नवलखा

⊙

कान वेधन के दर्द को
कितनी ही बार सहा है
मौन हो पिया है
इसी से वह क्षण
बिन बिखरे गया है
खडित दीवारो के
छितराये टुकडो को
हथेलियो मे समेटते रहे हम
और आज,
पूरी दीवार अगुलियो मे थामे है।

सतपथ

⊙

हरिश्चन्द्र पाठक 'अजेय'

⊙

पथ की बाधाओ के सम्मुख झुक जाता तो इन्सान नही।

जीवन को मौत छला करती
पर सृजन मौत पर मुस्काता
हर शाम चिता जलती दिन की
हर प्रात नया दिन आ जाता।

असफलताओ की ज्वाला मे, फु क जाता जो अरमान नही।

फूलो मे बध न सकी सरिता
तट के मसूबे टूट गए
युग को कब धारा बाध सकी
जब बाधा, बन्धन छूट गए।

गति की सीमाओ मे बध कर, रुक जाता जो तूफान नही।

सतपथ केवल साध्य पथिक का
जीवन तो मात्र भुलावा है
शूलो मे राह बना ले जो
मजिल पर उसका दावा है।

सुविधा की पहली बोली पर बिक जाता जो ईमान नही।

एक ही प्रकाश है !

⊙

सत्य प्रकाश प्रखर

⊙

एक वायु एक जल एक ही प्रकाश है ।
अग्नि एक धरा एक, एक ही आकाश है ।

जो एक को अनेक मे विभक्त कर रहे—
उनसे कहो भेद की दीवार तोड दे ।

सीमाये खीच रही अपराधी वृतिया,
बटवारे धूप छाव के ।

स्वार्थी जरीपो से नाप रही नीतिया ।
टुकडे हर देश गाव के ।

जिन हाथो मे कपोल हतिनी गुलेल ।
उनसे कहो घातक हथियार छोड दे ।

लहराती लाल हरी या पीली झाडिया
खेमो के अलग-अलग चिह्न ।

सधि किये बैठे हैं अपराधी विश्व के ।
मानवता है उदास खिन्न ।

चौतरफा लगती हैं लाशो की मडिया ।
उनसे कहो खूनी व्यापार छोड दे ।

सत्यानुभूति

⊙

मल्लिका

⊙

सत्य के अनासक्त द्रश्य
होने से ही मात्र
काम नही चलता,
विद्रूप स्थितिया, व्यग
विसगतिया
अभिव्यक्त करे
—और करे दावा
उनसे असम्पृक्त,
तटस्थ रहने का,
असम्भव यह सव,
सत्य मागता है—
निज सौन्दर्य और मगल पक्ष,
अन्तरात्मा का आत्मा से
जुडने का भाव
जुडाने का प्रयास,
—और रचनात्मक द्रष्टि
विवेक भीगी ।

सत्य-क्षमा-स्नेह

⊙

राजकुमार सैनी

⊙

असत्य चाहे
कितना भी मानवीय हो,
शिव हो, सुन्दर हो,
सत्य से अधिक वरेण्य नही है।
(फिर वह सत्य बिना विशेषण ही क्यो न हो)

(२)

दड चाहे,
कितना भी अनिवार्य हो,
युक्तियुक्त हो, व्यावहार्य हो
क्षमा से अधिक श्रेण्य नही है
(फिर वह क्षमा अयाचित ही क्यो न हो)

(३)

घृणा चाहे
कितनी भी हार्दिक हो,
यथोचित या सुचिंतित हो,
स्नेह से अधिक मान्य नही है
(फिर वह स्नेह अकारण ही क्यो न हो)

मानव और यंत्र

बघनखा आदर्शों का पहन

तुम्हारे यान्त्रिक हाथ

आकाश से भी ऊँचे उठ गये।

किंतु

बाप-दादों से विरसे में मिला

तुम्हारा मन

तुम्हारा तन

कितना बौना है आज भी।

—श्यामसिंह शशि

इस ग्रंथ के कवि

- **बच्चन**

  हिन्दी के जाने-माने स्वनामधन्य कवि। हालावाद के जनक। अनेक काव्य-ग्रथो के सृजेता। अग्रेजी साहित्य मे पी एच डी किन्तु लेखन कार्य एव सेवा राष्ट्रभाषा की।

- **मुनि श्री नथमल**

  आचार्य श्री तुलसी के प्रमुख शिष्य, सुप्रसिद्ध दार्शनिक और लब्ध-प्रतिष्ठित साहित्यकार। सस्कृत के आशु कवि।

- **गोपाल प्रसाद व्यास**

  हिन्दी के हास्यरसावतार! दिल्ली प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन के सुदृढ स्तभ। सुपरिचित व्यक्तित्व।

- **क्षेमचन्द्र सुमन**

  लब्धप्रतिष्ठित कवि। अनेक साहित्यिक, सामाजिक तथा सास्कृतिक सस्थाओ के वरिष्ट अधिकारी।

- **प्रभाकर माचवे**

  ख्याति-प्राप्त साहित्यकार। लेखक, कवि, समीक्षक। अनेक भाषाओ के ज्ञाता। साहित्य अकादमी के यशस्वी सचिव।

- **निर्भय हाथरसी**

  सुप्रसिद्ध हास्य-व्यग्य कवि।

- **सलेख चन्द 'मधुप'**

  हिन्दी के उदीयमान युवा कवि।

- **फूलचन्द 'मानव'**

  हिन्दी कवि।

- **काका हाथरसी**

  हास्य रस के सुविख्यात कवि। कवि-सम्मेलनो की जान।

- **ओम प्रकाश द्रोण**
  कवि वर ।
- **कीर्तिनारायण मिश्र**
  सुपरिचित कवि ।
- **विद्यावती मिश्र**
  सुपरिचित हिन्दी कवयित्री ।
- **मैथलीशरण गुप्त**
  स्वर्गीय सुपरिचित कवि । अनेक काव्य ग्रथो की सृजेता ।
- **ओमप्रकाश गुप्त**
  पेशे से इजीनियर, रुचि कविता मे।
- **नरेन्द्र शर्मा**
  जाने-माने कवि ।
- **बाबू राम पालीवाल**
  हिन्दी साहित्यकार ।
- **श्रीमतवाला मगल**
  सुपरिचित कवि ।
- **शशिप्रभा चावला**
  देश-विदेश मे भ्रमण । उदीयमान लेखिका तथा कवयित्री ।
- **महावीर प्रसाद 'हलवाई'**
  ग्वालियर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एव चिन्तक ।
- **चन्द्रपाल सिह 'चन्द्र'**
  श्रेष्ठ कवि ।
- **कु. आशा शर्मा**
  राजनीति-शास्त्र की अध्येता किन्तु कविता का मोह ।
- **राजेन्द्र मिलन**
  आगरा के सुप्रतिष्ठित गीतकार । अनेक साहित्यिक सस्थाओ से सबद्ध ।
- **मदन 'विरक्त'**
  विख्यात सर्वोदयी कार्यकर्त्ता । अच्छे कवि, लेखक तथा पत्रकार ।

- **गोपीनाथ अमन**
  उर्दू के मशहूर कवि। सुपरिचित साहित्यकार।
- **कालीचरण 'असर देहलवी'**
  सुप्रसिद्ध साहित्यकार।
- **चन्दनमल 'चांद'**
  'जैन जगत' के प्रबंध सम्पादक। सुपरिचित कवि।
- **विशाल त्रिपाठी**
  अच्छे कवि। हिन्दी कार्य से संबद्ध।
- **रमेश कौशिक**
  हिन्दी के श्रेष्ठ कवि। भ्रमण की रुचि। शायद इसीलिए परिवहन अधिकारी।
- **अर्जुन भारती**
  उदीयमान युवा कवि।
- **अल्हड़ बीकानेरी**
  ख्याति-प्राप्त हास्य कवि। मंच के जादूगर।
- **सत्यप्रकाश बजरंग**
  सुपरिचित कवि। दिल्ली की कई साहित्यिक संस्थाओं के सुयोग्य कार्यकर्त्ता।
- **सुरेन्द्र**
  युवा कवि।
- **बुधमल शामसुखा**
  सुपरिचित कवि। साहित्य-मर्मज्ञ एवं समाज-सेवी।
- **कन्हैयालाल सेठिया**
  राजस्थान के मूर्धन्य कवि एवं साहित्यकार समाज-सेवी।
- **दिनेशनंदिनी**
  सुप्रसिद्ध दार्शनिक कवयित्री। समाज-सेविका और चिन्तनशील लेखिका।
- **श्रमण सागर**
  आचार्यश्री तुलसी के विद्वान शिष्य। सुप्रसिद्ध कलाकार। इतिहास-मर्मज्ञ तथा लोककवि।

- **हरीश भादानी**

  सुकवि ।

- **मुनि विनय कुमार 'आलोक'**

  आचार्यश्री तुलसी के सुप्रिय शिष्य । हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि । चिन्तक तथा दार्शनिक ।

- **सोहनलाल द्विवेदी**

  विख्यात राष्ट्रकवि । उदार दृष्टिकोण । अतीत के परिप्रेक्ष्य मे नवीन के प्रति सम्मान । अनेक काव्य-ग्रथो के प्रणेता । अनवरत अध्यवसायी ।

- **सुमित्रानन्दन पत**

  छायावाद के स्तभ । अनेक काव्य-ग्रन्थो, के सृजेता । प्रकृति के सुकुमार कवि ।

- **डा. गोपाल शर्मा**

  सुप्रसिद्ध कवि, लेखक, समीक्षक । हिन्दी निदेशालय मे निदेशक । हिन्दी की सेवा मिशन तथा श्रेष्ठ लेखनलक्ष्य । अनेक साहित्यिक सस्थाओ से सबधित ।

- **चन्द्रदत्त इन्दु**

  हिन्दी के सुपरिचित कवि तथा लेखक । बाल-साहित्यमर्मज्ञ तथा पुरस्कृत साहित्यकार ।

- **रवीन्द्र मिश्र**

  राजधानी के गम्भीर विषयो पर कलम चलाने वाले वैज्ञानिक कवि ।

- **सत्यमोहन शर्मा**

  सुप्रसिद्ध साहित्यकार ।

- **जगदीश चतुर्वेदी**

  हिन्दी के श्रेष्ठ कवि । राजकीय पुरस्कार-प्राप्त । 'भाषा' के सम्पादक ।

- **नारायण लाल परमार**

  भूतपूर्व सैनिक । सुप्रसिद्ध कवि ।

- **मधुर शास्त्री**

  जाने-माने श्रेष्ठ गीतकार । जैसा नाम वैसी रचना ।

- **चन्द्रसेन विराट**
  सुपरचित कवि। अनवरत रूप से लेखन।
- **श्यामलाल 'शमी'**
  जाने-माने गीतकार। सुकुमार भावनाओ के सूक्ष्म प्रेक्षक।
- **राजेन्द्र अनुरागी**
  सुप्रसिद्ध कवि तथा चिन्तक।
- **गबरसिंह रावत**
  उदयीमान युवा कवि। 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' से सबधित।
- **केदारनाथ कोमल**
  नई धारा के सुपरिचित कवि, लेखक तथा समीक्षक।
- **डा. जीवनप्रकाश जोशी**
  हिन्दी साहित्य मे पी एच डी। सुप्रसिद्ध कवि, लेखक तथा समीक्षक।
- **डा. उमाशकर सतीश**
  भाषा वैज्ञानिक। युवा कवि, लेखक तथा समीक्षक।
- **इन्दु जैन**
  हिन्दी जगत की सुप्रसिद्ध कवयित्री। नई कविता मे विशेष रुचि। कई विधाओ मे साहित्य-सर्जन।
- **पुष्पधन्वा**
  श्रेष्ठ कवि।
- **विनोद शर्मा**
  उदीयमान कवि। कई साहित्यिक सस्थाओ से सबद्ध।
- **रामकुमार 'कृषक'।**
  सुपरिचित युवा कवि। कई प्रबध-काव्यो के सृजेता। लेखक और पत्रकार।
- **भवानी प्रसाद मिश्र**
  हिन्दी की महान विभूति। लोकप्रिय कवि। कई राजकीय पुरस्कारो से विभूषित। राष्ट्रीय चेतना के प्रेरक।
- **डा शेरजग गर्ग**
  सुप्रसिद्ध युवाकवि, लेखक और समीक्षक। मच पर भी उतने ही सफल जितने कृतियो मे।

- **प्रेमानद चदोला**

  गभीर विषयो पर कलम चलाने वाले लेखक तथा सुकवि। विज्ञान के अध्येता पर कविता का मोह।

- **दिविक रमेश**

  सुकवि।

- **विश्वनाथ मिश्र**

  राजधानी के सुपरिचित साहित्यकार। कवि तथा लेखक। सचार मत्रालय मे हिन्दी अधिकारी। कई साहित्यिक सस्थाओ से सबद्ध।

- **पुरुषोत्तम प्रतीक**

  नये प्रतीको के जनक युवा-कवि।

- **विमला दयाल**

  सुकवयित्री।

- **जगपालसिह सरोज**

  अच्छे गीतकार। उदीयमान कवि तथा लेखक।

- **लक्ष्मी त्रिपाठी**

  सुप्रसिद्ध कवयित्री, लेखिका तथा सम्पादिका।

- **रघुवीर शरण मित्र**

  राष्ट्रीय विषयो पर कई काव्य-ग्रन्थ प्रकाशित। मेरठ के सुप्रसिद्ध साहित्यकार।

- **धनजयसिह**

  सुपरिचित कवि।

- **गुणमाला नवलखा**

  हिन्दी कवयित्री।

- **हरिश्चन्द्र पाठक 'अजेय'**

  ओजस्वी कवि। कई साहित्यिक सस्थाओ से सबद्ध।

- **सत्यप्रकाश प्रखर**

  हिन्दी के सुपरिचित कवि। आचलिकता की ओर रुचि।

- **मल्लिका**

  श्रेष्ठ कवयित्री।

- **राजकुमार सैनी**

  नई धारा के सुकवि लेखक तथा समीक्षक। विचार-कविता की ओर रुझान।

(सम्पादक-परिचय.—आवरण पृष्ठ ३ पर)